मूल्य : 20/- पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 डाक पंजीकरण संख्या : UP/GBD- 249/2020-2022

वर्ष : ५ फरवरी : २०२१, विक्रमी सम्वत् : २०७७
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२१, दयानन्दाब्द : १९७ अंक : ८

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

पं. रामचन्द्र देहलवी
स्मृति : 3 फर.

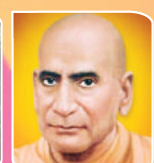
स्वामी श्रद्धानंद
जन्म : 13 फर.

पं. चमूपति
जन्म : 15 फर.

पं. लेखराम
जयंती : 17 फर.

वीर सावरकर
स्मृति : 26 फर.

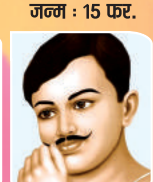
चंद्र शेखर आजाद
बलिदान : 27 फर.

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

देवयज्ञ अग्निहोत्र का करना मनुष्य का पुनीत सर्वहितकारी कर्तव्य : पेज - 10-11

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल नोएडा में 72वें गणतंत्र दिवस की झलकियां

ओमकार शास्त्री, आचार्य जयेन्द्र कुमार और नीरज आर्य

आचार्य जी का उद्बोधन व गीत प्रस्तुति

उपप्रधान कै. अशोक गुलाटी द्वारा देशभक्ती के गीत की प्रस्तुति

प्रधान जी का उद्बोधन

ब्र. द्वारा देशभक्ती के गीत की प्रस्तुति

ब्र. को पारितोषिक प्रदान करते अधिकारी।

ओ३म्

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम्॥

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17, Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022
Date of Dispatch 12 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : राष्ट्र के सर्वमान्य नेता...	2
2.	मां की सेवा ही यशस्वी बनाती है	3
3.	संस्कृत भाषा का महत्व और उसका शिक्षण	4–5
4.	ईश्वर की सत्ता	6–7
5.	देवयज्ञ अग्निहोत्र का करना मनुष्य...	8–9
6.	वेदों में वर्णित पुरुष सूक्त पर भ्रान्ति...	10
7.	माघे सन्ति त्रयो गुणाः	11
8.	महापुरुषों को नमन...	12–13
9.	वसंत पंचमी पर्व का महत्व	14
10.	भक्त की भावना...	21
11.	समाचार–सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : फूलगोभी : लाजवाब स्वाद...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

राष्ट्र के सर्वमान्य नेता सुभाष चंद्र बोस पर बंगाल में हो रही राजनीति ठीक नहीं...

सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था। पिता जानकीनाथ बोस तथा माता प्रभावती थीं। भारत की आजादी में अहम् योगदान देने वाले नेताजी की आरंभिक शिक्षा उनके कटक शहर में हुई आरंभिक शिक्षा के बाद नेताजी इंडियन सिविल सर्विस की तैयारी के लिए इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय चले गये। उन्होंने 1920 में चौथा स्थान प्राप्त कर आईसीएस की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1921 में भारत में बढ़ती राजनीतिक गतिविधियों का समाचार पाकर नेताजी ने आईसीएस पद से इस्तीफा दे दिया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नामक राजनीतिक दल से जुड़ गय। नेताजी सुभाष चंद्र बोस का सपना भारत की पूर्ण आजादी का था। इसलिए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक आजाद हिन्द फौज के संस्थापक और 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' का नारा देने वाले सुभाष चन्द्र बोस ने अंग्रेजों से कई बार लोहा लिया। इस दौरान ब्रिटिश सरकार ने उनके खिलाफ कई मुकदमे दर्ज किये जिसके कारण नेताजी को 11 बार जेल जाना पड़ा। नेताजी 16 जुलाई 1920 को पहली बार तथा 1925 में दूसरी बार जेल गये। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने 30 दिसम्बर 1943 को पोर्ट ब्लेयर की सेल्युलर जेल में पहली बार तिरंगा फहराया।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर में 1943 में 21 अक्टूबर के दिन आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति के रूप में स्वतंत्र भारत की प्रांतीय सरकार बनाई। इस सरकार को जापान, जर्मनी, इटली और उसके बाद तत्कालीन सहयोगी देशों का समर्थन मिलने के बाद अंग्रेजी सरकार की जड़ें हिल गयी। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने 4 जून 1944 को सिंगापुर में एक रेडियो संदेश प्रसारित करते हुए महात्मा गांधी को पहली बार राष्ट्रपिता कहकर संबोधित किया। पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस को मरणोपरांत भारत रत्न देने का प्रस्ताव दिया था। 10 अक्टूबर 1991 को राष्ट्रपति आर वेंकटरमन को पत्र लिखकर भारत रत्न देने की बात कही थी। परंतु राजनीतिक दलों के कुचक्रों के कारण देश के महान क्रांतिकारी सुभाष चंद्र बोस को भारत रत्न नहीं मिल पाया। ऐसे महान क्रांतिवीर भारत की आजादी के लिए सर्वस्व समर्पण त्याग करने वाले योद्धा पर बंगाल में हो रही राजनीति तनिक भी शोभा नहीं देती। ऐसे राष्ट्रनायक नेताजी को मैं अपने श्रद्धासुमन समर्पित करता हूं। आइए हम सभी उनके आदर्शों पर चलकर राष्ट्र को उन्नत दिशा प्रदान करें।

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

भारत की आजादी में अहम् योगदान देने वाले नेताजी की आरंभिक शिक्षा उनके कटक शहर में हुई आरंभिक शिक्षा के बाद नेताजी इंडियन सिविल सर्विस की तैयारी के लिए इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय चले गये। उन्होंने 1920 में चौथा स्थान प्राप्त कर आईसीएस की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1921 में भारत में बढ़ती राजनीतिक गतिविधियों का समाचार पाकर नेताजी ने आईसीएस पद से इस्तीफा दे दिया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नामक राजनीतिक दल से जुड़ गय। नेताजी सुभाष चंद्र बोस का सपना भारत की पूर्ण आजादी का था। इसलिए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक आजाद हिन्द फौज के संस्थापक और 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' का नारा देने वाले सुभाष चन्द्र बोस ने अंग्रेजों से कई बार लोहा लिया। इस दौरान ब्रिटिश सरकार ने उनके खिलाफ कई मुकदमे दर्ज किये जिसके कारण नेताजी को 11 बार जेल जाना पड़ा। नेताजी 16 जुलाई 1920 को पहली बार तथा 1925 में दूसरी बार जेल गये। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने 30 दिसम्बर 1943 को पोर्ट ब्लेयर की सेल्युलर जेल में पहली बार तिरंगा फहराया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर में 1943 में 21 अक्टूबर के दिन आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति के रूप में स्वतंत्र भारत की प्रांतीय सरकार बनाई।

मां की सेवा ही यशस्वी बनाती है

आर्य के. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

संत कहते हैं कि मां के चरणों में स्वर्ग होता है। भगवान राम ने भी माता को स्वर्ग से महान बताया है। ऋग्वेद में ऋषि माताओं से आग्रह करते हैं कि जल के समान वे हमें शुद्ध करें। वे हमें तेजवान और पवित्र बनाएं। माता अपने पुत्र को बलवान बना सकती है। जैसे-कहा जाता है कि मकान की नींव कमजोर हो तो मकान गिर जाता है उसी प्रकार मां के द्वारा दी जाने वाली संस्कारित शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन पशु तुल्य और निस्तेज हो जाता है और ऐसे व्यक्ति का समाज में महत्व खत्म हो जाता है।

'भागवत पुराण के अनुसार, माताओं की सेवा से मिला आशीष सात जन्मों के दोषों को दूर करता है।' उसकी भावनात्मक शक्ति संतान के लिए सुरक्षा कवच का कार्य करती हैं, ऋग्वेद के एक मंत्र में मां की प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि हे उषा के समान प्राणदायिनी मां! हमें महान सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करो। तुम हमें नियम-परायण बनाओ। हमें यश और अद्भुत ऐश्वर्य प्रदान करो। इस मंत्र के माध्यम से ऋषि यह सिद्ध करना चाहते हैं कि मां की शक्ति अपार होती है, लेकिन इसका लाभ श्रद्धावान और सेवा भाव से भरपूर संतान को ही मिलता है। यदि वे मां के हृदय को ठेस पहुंचाते हैं, तो निश्चित तौर पर आशीष की तरंगें निष्क्रिय हो जाती हैं। ऐसा आप्त पुरुषों का वचन है कि जिस दिन हमारे कारण मां की आंखों में आंसू आते हैं उस दिन हमारे जीवन के सारे पुण्य पाप में बदल जाते हैं।

ऋग्वेद के एक दूसरे मंत्र में ऋषि स्पष्ट कहते हैं कि माता-पिता का पवित्र धीर, विनम्र और अग्नितुल्य तेजस्वी पुत्र अपनी शक्ति से संसार को पवित्र करता है। द्वापर युग का एक उदाहरण मिलता है कि मां गंगा ने देवव्रत (पितामह भीष्म) को योग्य धर्नुधर बना दिया। उनके आगे बड़े-बड़े योद्धा युद्ध नहीं कर पाते थे। पितामह भीष्म अपनी सौतेली मां की बात सुनकर पिता के सुख के लिए अपना सारा जीवन ब्रह्मचारी रहकर बिता दिया।

वह सभी जगह ज्ञान और सदाचार का प्रचार करें। वेदों में माता को अंबा, देवी, सरस्वती, शक्ति, ज्योति, उषा, पृथ्वी आदि से संबोधित किया गया है। महाभारत के अनुशासन पर्व में पितामह भीष्म कहते हैं कि भूमि के समान कोई दान नहीं, माता के समान कोई गुरु नहीं, सत्य के समान कोई धर्म नहीं, दान के समान कोई पुण्य नहीं। चाणक्यनीति में कौटिल्य कहते हैं कि माता के समान कोई देवता नहीं है। माता-परम देवी होती है। माता की सेवा से साथ-साथ पिता, गुरुओं और वृद्धजनों की सेवा करने वाला, दीन हीन की सहायता करने वाला, संसार में यश प्राप्त करता है।

उसकी आलोचना करने का साहस उसके शत्रु भी नहीं कर सकते हैं। यजुर्वेद में एक प्रेरणादायक मंत्र है, जिसमें कहा गया है कि जिज्ञासु पुत्र तू माता की आज्ञा का पालन कर। अपने दुराचरण से माता को कष्ट मत दे। अपनी माता को अपने समीप रख। मन को शुद्ध कर और आचरण की ज्योति को प्रकाशित कर। वास्तव में माता स्वयं में एक पवित्रतम शक्ति है। उसकी सेवा करें, साथ ही जो माता तुल्य हैं और वृद्ध, असहाय और वंचित हैं, वे भी हमारी सेवा के अधिकारी हैं। हमें सभी की सेवा करनी चाहिए क्योंकि मातृशक्ति का सम्मान आज के युग में बहुत जरूरी है। जबकि हम सब जानते हैं कि यदि

'भागवत पुराण के अनुसार, माताओं की सेवा से मिला आशीष सात जन्मों के दोषों को दूर करता है।' उसकी भावनात्मक शक्ति संतान के लिए सुरक्षा कवच का कार्य करती हैं, ऋग्वेद के एक मंत्र में मां की प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि हे उषा के समान प्राणदायिनी मां! हमें महान सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करो। तुम हमें नियम-परायण बनाओ। हमें यश और अद्भुत ऐश्वर्य प्रदान करो। इस मंत्र के माध्यम से ऋषि यह सिद्ध करना चाहते हैं कि मां की शक्ति अपार होती है, लेकिन इसका लाभ श्रद्धावान और सेवा भाव से भरपूर संतान को ही मिलता है। यदि वे मां के हृदय को ठेस पहुंचाते हैं, तो निश्चित तौर पर आशीष की तरंगें निष्क्रिय हो जाती हैं। ऐसा आप्त पुरुषों का वचन है कि जिस दिन हमारे कारण मां की आंखों में आंसू आते हैं उस दिन हमारे जीवन के सारे पुण्य पाप में बदल जाते हैं।

माताओं का सम्मान नहीं करेंगे तो राष्ट्र और समाज का पतन हो जायेगा। इसलिए हम सभी संकल्प लें और (माता निर्माता भवति इस कथन को विचार कर माताओं की सेवा और सम्मान करें।

संस्कृत भाषा का महत्व और उसका शिक्षण

डॉ. भवानीलाल भारतीय

स्वामी दयानन्द संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार को स्वदेश की उन्नति के लिए अत्यावश्यक समझते थे। उनका यह सत्य विश्वास था कि भारत की प्राचीन परम्परा और संस्कृति संस्कृत साहित्य में सुरक्षित है। आर्यों के प्राचीन धर्म, दर्शन, अध्यात्म तथा जीवन दर्शन को यदि समझना हो तो संस्कृत का ज्ञान होना अपरिहार्य है। उन्होंने स्वयं तो संस्कृत का प्रचार किया ही, अन्यों को भी इस कार्य में प्रवृत्त होने के लिए कहा। स्वामीजी ने जब इस देश में जन्म लिया उस समय यहां अंग्रेजों का राज्य था। राज कार्य की भाषा अंग्रेजी थी और उर्दू-फारसी का प्रचलन पढ़े-लिखे लोगों में अधिक था। संस्कृत का अध्ययन ब्राह्मणों तक सीमित रह गया था और उनमें भी मात्र काम चलाऊ संस्कृत ज्ञान को ही पर्याप्त समझा जाता था जो पौरोहित्य कर्म में उनका सहायक होता। ऐसी स्थिति में संस्कृत भाषा के अध्ययन-अध्यापन तथा प्रचार-प्रसार के लिए बद्ध परिकर होना, स्वामी दयानन्द की एक महती देन थी।

आदिम सत्यार्थ प्रकाश (1875) के 14वें समुल्लास के अंत में उन्होंने एक विस्तृत विज्ञापन परिशिष्ट रूप में दिया था जिसमें संस्कृत भाषा का महत्व, स्वल्प आत्म वृतांत तथा कुछ अन्य उपयोगी विषयों का समावेश था। इस परिशिष्ट (विज्ञापन) का आरंभ वे इन पंक्तियों से करते हैं- 'इससे मेरा यह विज्ञापन है आर्यावर्त का राजा अंग्रेज बहादुर से कि संस्कृत विद्या की ऋषि-मुनियों की रीति से प्रवृत्त करावें। इससे राजा और प्रजा को अनंत सुख-लाभ होगा और जितने आर्यावर्तवासी सज्जन लोग हैं उनसे भी मेरा कहना है कि इस सनातन संस्कृत विद्या का उद्धार अवश्य करें, ऋषि मुनियों की रीति से, अत्यंत आनन्द होगा और जो संस्कृत विद्या लुप्त हो जायेगी तो सब मनुष्यों की बहुत हानि होगी इसमें कुछ सन्देह नहीं।' (भाग 1, पृ. 35-36)

यहां यह बात ध्यातव्य है कि स्वामीजी को ऋषि मुनियों की शैली से ही संस्कृत का पठन-पाठन इष्ट था। अर्थात वे आर्ष ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार को मानव के लिए हितकारी मानते थे और व्याकरण के अध्ययन में महर्षि पाणिनि तथा पतंजलि कृत अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य के अध्ययन की उपयोगिता को आवश्यक समझते थे। अनार्ष ग्रन्थों की सहायता से संस्कृत का सम्यक् बोध नहीं होता यह उनका ध्रुव निश्चय था। इसी विज्ञापन में आगे वे लिखते हैं- 'परंतु आर्यावर्त देश की स्वाभाविक सनातन विद्या संस्कृत ही है जो कि उक्त प्रकार से प्रथम कही, उसी (रीति) से इस देश का कल्याण होगा अन्य देश भाषा से नहीं। अन्य देश भाषा तो जितना प्रयोजन हो उतना ही पढ़नी चाहिए और विद्या स्थान में संस्कृत ही रखना चाहिए।' (भाग 1, पृ. 42) संस्कृत की शिक्षा सुगम रीति से आर्ष पद्धति को अपनाने से ही हो सकती है और इसके लिए पाणिनीय शास्त्र के ज्ञान को स्वामीजी आवश्यक समझते थे। उन्होंने स्वयं अष्टाध्यायी का सुगम संस्कृत और हिन्दी में भाष्य लिखने का विचार किया और इसके बारे में एक विज्ञापन प्रकाशित कराया। इस विज्ञापन में उन्होंने स्पष्ट लिखा कि संस्कृत विद्या की उन्नति सर्वथा अभीष्ट है और यह व्याकरण बिना नहीं हो सकती। संस्कृत के प्रचलित कौमुदी, चन्द्रिका, सारस्वत, मुग्धबोध और आशु बोध आदि ग्रन्थों को वे संस्कृत शिक्षण में अपर्याप्त समझते थे क्योंकि इनसे वैदिक विषय का यथावत ज्ञान नहीं होता। अतः उस विज्ञापन में उन्होंने स्पष्ट किया कि- 'वेद और प्राचीन आर्ष ग्रन्थों के ज्ञान के बिना किसी को संस्कृत विद्या का यथार्थ फल नहीं हो सकता।' (भाग 1, पृ. 142)

संस्कृत का आर्ष रीति से शिक्षण कराने के लिए स्वामीजी ने भिन्न-भिन्न स्थानों पर संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना की। उनके द्वारा फर्रुखाबाद में सर्वप्रथम ऐसी पाठशाला स्थापित की गई और वहां के धनी-मानी, सम्पन्न सेठ-साहूकारों को इसके संचालन का भार सौंपा गया। स्वामीजी का प्रयोजन तो इन शालाओं के द्वारा प्राचीन संस्कृत भाषा तथा आर्ष वाङ्मय का पुनरुद्धार करना था किन्तु हुआ इसके विपरीत। प्रचलित रीति के अनुसार इन विद्यालयों में भी संस्कृत अध्यापन को गौण कर दिया गया और अंग्रेजी आदि के पठन-

पाठन को महत्व मिलने लगा। जब स्वामीजी को यह समाचार मिला तो वे अत्यन्त खिन्न हुए और शिकायत के लहजे में सेठ निर्भयराम को लिखा– 'कालीचरण रामचरण के पत्र से विदित हुआ कि आप लोगों की पाठशाला में संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा अंग्रेजी व उर्दू–फारसी अधिक पढ़ाई जाती है। उससे वह अभीष्ट जिसके लिए यह शाला खोली गई है सिद्ध होता नहीं दीखता। वरन् आपका यह हजारहा मुद्रा का व्यय संस्कृत की ओर से निष्फल होता भासता है।

आप लोग देखते हैं कि बहुत काल से आर्यावर्त में संस्कृत का अभाव हो रहा है। वरन संस्कृत रूपी मातृ भाषा की जगह अंग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है।' आगे वे लिखते हैं कि अंग्रेजी का प्रचार तो (ब्रिटिश) सम्राट की ओर से ही हो रहा है क्योंकि वह आज के हमारे शासकों की मातृभाषा है। पुनः हम उसके लिए उद्योग क्यों करें? उन्हें इस बात का खेद है कि हमारी अति प्राचीन मातृभाषा संस्कृत का सहायक वर्तमान में कोई नहीं है। पत्र में आगे उन्होंने सेठ निर्भयराम को निर्देश दिया है कि आगे से पढ़ाई के छह घंटों में संस्कृत को तीन घंटे मिले, अंग्रेजी को दो तथा उर्दू–फारसी को एक घंटा दिया जाए। वे इस बात पर भी जोर देते हैं कि छात्रों की संस्कृत में नियमित परीक्षा ली जाये और प्रश्नोत्तर (परीक्षा फल) उनके पास भेजा जाये। (भाग 2, पृ. 501–502) उपर्युक्त पत्र से स्वामीजी की संस्कृति विषयक चिंता सुस्पष्ट हो जाती है। फर्रुखाबाद के बाबू दुर्गाप्रसाद को लिखे अपने पत्र में भी वे संस्कृत के बारे में ताकीद करना नहीं भूले। यहां लिखा, 'पाठशाला में संस्कृत का काम ठीक–ठीक होना चाहिए। इस पाठशाला में मुख्य संस्कृत जो मातृ भाषा है उसकी ही वृद्धि होनी चाहिए। वरन् फारसी का होना कुछ आवश्यक नहीं। केवल संस्कृत और राजभाषा अंग्रेजी दो ही का पठन–पाठन होना आवश्यक है।' (भाग 2, पृ. 504–505) स्वस्थापित संस्कृत पाठशालाओं से यदि संस्कृत शिक्षा के लक्ष्य की पूर्ति नहीं होती तो वे उनको चलाये जाने के पक्ष में नहीं थे। बाबू दुर्गाप्रसाद को लिखे एक अन्य पत्र में उन्होंने पूछा है कि 'पाठशाला में संस्कृत पढ़ के कितने विद्यार्थी समर्थ हुए। अथवा अंग्रेजी–फारसी में ही व्यर्थ धन जाता है सो लिखो। जो व्यर्थ ही हो तो क्यों पाठशाला खोली जाए।' (भाग 2, पृ. 625) स्वामीजी के पत्रों से उपर्युक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि वे आजीवन संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार में लगे रहे। सामान्यजनों को ही नहीं, यहां के राजा–महाराजाओं को भी अपने राजकुमारों को संस्कृत पढ़ाने का निर्देश, उपदेश उन्होंने दिया।

संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना– आर्ष पाठ विधि से संस्कृत की शिक्षा देनी उचित है, इस मान्यता के कारण स्वामी दयानन्द ने कुछ नगरों में संस्कृत पाठशालाएं स्थापित कीं। उनका विचार था कि इन पाठशालाओं में शिक्षा प्राप्त छात्र पौराणिक कट्टरता से मुक्त होंगे तथा भावी जीवन में वैदिक विचारधारा तथा आर्य सिद्धान्तों को अपना कर समाज के उत्थान हेतु कार्य करेंगे। जिस पाठ विधि का प्रचलन वे अपनी पाठशालाओं में करना चाहते थे उसकी विस्तृत रूपरेखा उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिख दी थी। सर्वप्रथम फर्रुखाबाद में सेठ पन्नीलाल की आर्थिक सहायता से स्थापित संस्कृत पाठशाला से उन्होंने अपनी उपर्युक्त योजना का क्रियान्वयन करना चाहा। उन्हें यह उचित लगा कि विरजानन्द की पाठशाला में जिन छात्रों ने अध्ययन किया है वे आर्ष व्याकरण में निष्णात हैं और यदि उन्हें इन शालाओं में अध्यापक नियुक्त किया जाता है तो वे अवश्य ही छात्रों को आर्ष व्याकरण तथा ऋषि–मुनियों द्वारा लिखे गए अन्य शास्त्रों एक अध्ययन करायेंगे। फर्रुखाबाद की पाठशाला के लिए उनका ध्यान अपने सहपाठी तथा व्याकरण के अद्वितीय विद्वान पं. गंगादत्त शर्मा (चौबे) की ओर गया। उन्होंने 1 सितम्बर 1870 को एक पत्र संस्कृत में लिख कर मथुरा भेजा। पत्र फर्रुखाबाद से भेजा गया था। पत्र के आरम्भ में 'स्वस्ति' के उल्लेख के साथ गंगादत्त शर्मा को दयानन्द सरस्वती स्वामी का आशीर्वाद निवेदन किया गया था। पत्र में उन्हें शीघ्र फर्रुखाबाद आकर पाठशाला का कार्य सम्भालने के लिए कहा गया था।

[स्रोत : स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्र-व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन]

आर्यों के प्राचीन धर्म, दर्शन, अध्यात्म तथा जीवन दर्शन को यदि समझना हो तो संस्कृत का ज्ञान होना अपरिहार्य है। उन्होंने स्वयं तो संस्कृत का प्रचार किया ही, अन्यों को भी इस कार्य में प्रवृत्त होने के लिए कहा। स्वामीजी ने जब इस देश में जन्म लिया उस समय यहां विदेशी अंग्रेजों का राज्य था। राज कार्य की भाषा अंग्रेजी थी और उर्दू-फारसी का प्रचलन पढ़े-लिखे लोगों में अधिक था। संस्कृत का अध्ययन ब्राह्मणों तक सीमित रह गया था और उनमें भी मात्र काम चलाऊ संस्कृत ज्ञान को ही पर्याप्त समझा जाता था जो पौरोहित्य कर्म में उनका सहायक होता।

ईश्वर की सत्ता

प्रो. रामविचार

वेद ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखते हैं और आस्तिकता के प्रचारक हैं। वेद नास्तिकता के विरोधी हैं। परन्तु संसार में कुछ व्यक्ति हैं जो ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करते। वेद ऐसे लोगों की बुद्धि पर आश्चर्य प्रकट करता है और उनकी भर्त्सना करता है।

न तं विदाथ य इमा जजानाऽन्यद्युष्माकमन्तरं बभूव। नीहारेण प्रावृता जल्प्या चाऽसुतृप उक्थशासश्चरन्ति ।। (ऋ० 10/82/7)

भावार्थ : तुम उसको नहीं जानते जो इन सबको उत्पन्न करता है। तुम्हारा अन्तर्यामी तुमसे भिन्न है। किन्तु मनुष्य अज्ञान से ढके हुए होने के कारण वृथा जल्प करते हैं और बकवादी प्राण-मात्र की तृप्ति में लगे रहते हैं।

अब हम तर्क और सृष्टि-क्रम के आधार पर ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने का प्रयत्न करेंगे। संसार और संसार के जितने पदार्थ हैं, वे परमाणुओं के संयोग से बने हैं, इस तथ्य को नास्तिक भी स्वीकार करता है। ये परमाणु संयुक्त कैसे हुए? नास्तिक कहता है कि ये परमाणु अपने-आप संयुक्त हुए। नास्तिक की यह धारणा मिथ्या है। परमाणुओं का संयोग अपने-आप नहीं हो सकता। संयोग करने वाली इस शक्ति का नाम परमात्मा है। जैसे सृष्टि और सृष्टि के पदार्थों के निर्माण के लिए परमाणुओं का संयोग होता है, वैसे ही वियोग भी होता है। परमाणुओं का यह वियोग अपने-आप नहीं होता। इन परमाणुओं के वियोग करने वाला भी परमात्मा ही है। जड़ और बुद्धि शून्य परमाणुओं में अपने-आप संयोग कैसे हो हो सकता है? इन जड़ परमाणुओं में इतना विवेक कैसे उत्पन्न हुआ कि उन्होंने अपने-आप को विभिन्न पदार्थों में परिवर्तित कर लिया?

यदि यह कहा जाए कि प्रकृति के नियमों एवं सिद्धान्तों से ही संसार की रचना हो जाती है, तो प्रश्न यह है कि जड़ प्रकृति में नियम और सिद्धांत किसने लागू किए? नियमों के पीछे कोई-न-कोई नियामक होता है। इन नियमों और सिद्धान्तों के स्थापित करने वाली सत्ता का नाम परमेश्वर है।

संसार की वस्तुएं एक-दूसरे की पूरक हैं। उदाहरणार्थ- हम दूषित वायु छोड़ते हैं, वह पौधों और वृक्षों के काम आती है और पौधे एवं वृक्ष जिस वायु को छोड़ते हैं वह मनुष्यों के काम आती है। इस प्रक्रिया के कारण संसार नरक होने से बच जाता है। किसने वस्तुओं का यह पारस्परिक संबंध स्थापित किया है? वस्तुओं के पारस्परिक संबंध को स्थापित करने वाली शक्ति का नाम ईश्वर है।

विज्ञान और आस्तिकता में कोई विरोध नहीं। विज्ञान जिन नियमों की खोज करता है, उन नियमों को स्थापित करने वाली ज्ञानवान सत्ता का नाम ही तो ईश्वर है। यदि विकास के कारण ही सृष्टि-रचना को माना जाए तो विकास का कारण कौन है? डार्विन के पितृ-नियम, अर्थात एक वस्तु से उसी के समान वस्तु का उत्पन्न होना, परिवर्तन का नियम अर्थात उपयोग तथा अनुपयोग के कारण वस्तुओं में परिवर्तन, अधिक उत्पत्ति का नियम और योग्यतम की विजय। यदि इन चारों नियमों को भी सत्य माना जाए तो प्रश्न यह है कि नियमों को स्थापित करने वाला कौन है?

वैज्ञानिक, धातुओं का आविष्कार तो करता है, परंतु उनका निर्माण नहीं करता। उनका निर्माण करने वाली कोई और शक्ति है जिसे परमात्मा कहते हैं। इसी प्रकार वैज्ञानिक, सृष्टि में विद्यमान नियमों की खोज करता है, वह नियमों का निर्माता नहीं है। इन नियमों का निर्माता एवं स्थापितकर्ता परमात्मा है। संसार में सोना, चांदी, लोहा, सीसा, कांस्य, पीतल आदि अनेक धातुएं पाई जाती हैं। हीरे, मोती, जवाहर आदि अनेक बहुमूल्य रत्न पाए जाते हैं। ये सब ईश्वर के द्वारा बनाए गए हैं, किसी मनुष्य के द्वारा नहीं बनाए गए।

इस ब्रह्मांड की असीम वायु, अनन्त जल, पृथिवी, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र। ये सब किसी महान सत्ता का परिचय दे रहे हैं। आस्तिक इसी महान सत्ता को ईश्वर के नाम से पुकारता है।

फल-फूल, वनस्पतियों और ओषधियों के संसार को देखकर भी मनुष्य को बहुत आश्चर्य होता है। गुलाब के पौधे वा नीम की पत्तियां देखने में कितनी सुन्दर लगती हैं। उनके किनारे बिना मशीन के एक-जैसे कटे होते हैं। गुलाब के फूल में सुन्दर रंग, मधुर मोहक सुगंध और उसके अंदर इत्र का प्रवेश, ये किसी बुद्धिमान कारीगर की कारीगरी को दिखा रहे हैं। अनार की अद्भुत रचना देखिए। ऊपर कठोर छिलका, छिलके के अन्दर झिल्ली, झिल्ली के अन्दर दानों का एक निश्चित क्रम में फंसा होना, दोनों में सुमधुर रस का भरा होना, उन रसभरे दानों में छोटी-सी गुठली और गुठली में सम्पूर्ण वृक्ष को उत्पन्न करने की शक्ति। वट

का विशाल वृक्ष और सरसों के बीज में एक विशाल वृक्ष का समाविष्ट होना, ये सब उस अद्भुत रचयिता को सिद्ध करते हैं। चींटी से लेकर हाथी तक जीव-जन्तुओं की शरीर-रचना, वन्य-जन्तुओं के आकार और विभिन्न पक्षियों और कीट-पतंगों की रचना, ये सब किसके कारण है? क्या जड़ प्रकृति में इतनी सूझ-बूझ है कि वह विभिन्न आकृतियों का सृजन कर दे। ये विभिन्न शरीर-रचनाएं परमपिता परमात्मा की ओर संकेत कर रही हैं। इस समय धरती पर पांच अरब व्यक्ति निवास करते हैं। सृष्टि के रचयिता की अद्भुत कारीगरी देखिए कि एक व्यक्ति की आकृति दूसरे व्यक्ति से नहीं मिलती।

इस संसार की विशालता भी आश्चर्यकारी है। ऐसा कहते हैं कि पृथिवी की परिधि 25 हजार मील है। पांच अथवा छह फुट लम्बे शरीरवाले मनुष्य के लिए यह परिधि आश्चर्यजनक है। पर्वत की विशालता भी कुछ कम आश्चर्यकारी नहीं? पत्थरों की एक विशाल राशि, जिसके आगे मनुष्य तुच्छ प्रतीत होता है। समुद्र की विशालता को लीजिए। कितनी अथाह-जलराशि होती है। सूर्य पृथिवी से 13 लाख गुणा बड़ा है। पृथिवी की परिधि आश्चर्यकारी है, परंतु पृथिवी से 13 लाख गुणा बड़ा सूर्य विशालता की दृष्टि से क्या कम विस्मयकारी है? और फिर सूर्य के समान ब्रहांड में करोड़ों सूर्य हैं। क्या यह संसार किसी अद्भुत रचयिता की ओर संकेत नहीं कर रहा है? जहां संसार की विशालता आश्चर्यकारी है, वहां सृष्टि की सूक्ष्मता भी कम विस्मयकारी नहीं। बड़े-से-बड़े हाथी को देखकर जहां आश्चर्य होता है, वहां चींटी-जैसे सूक्ष्म प्राणियों को देखकर भी विस्मय होता है। संसार की यह सूक्ष्मता भी किसी रचयिता की ओर संकेत कर रही है।

कुछ लोग कहते हैं कि यह संसार अकस्मात् बना है। कोई भी घटना पूर्व-परामर्श अथवा पूर्व-प्रबंध के बिना नहीं होती। बाजार में दो व्यक्तियों का अकस्मात् मिलन उनकी इच्छा-शक्ति से प्रेरित होकर किसी उद्देश्य के लिए घर से निकलने का परिणाम है। अकस्मात् वाद का आश्रय लेकर यदि कोई कहे कि देवनागरी के अक्षरों को उछालते रहने से 'रामचरित मानस' की रचना हो जाएगी तो उनकी यह कल्पना असम्भव है। 'रामचरित मानस' की रचना के पीछे किसी ज्ञानवान चेतन सत्ता की आवश्यकता है।

■■ **साभार : 'वैदिक धर्म का स्वरूप'**

उत्तम व्यवहार

आपका उत्तम व्यवहार ही अपरिचितों को आपका मित्र बनाता है। और आपका दुर्व्यवहार ही आपके मित्रों को भी आपका शत्रु बना सकता है। जन्म से आपको माता-पिता, भाई-बहन आदि अनेक मित्र मिलते हैं, जो जन्म से ही आपकी अनेक प्रकार की सहायता करते हैं। परन्तु जन्म से कोई किसी का शत्रु नहीं होता। जब आप कुछ बड़े हो जाते हैं और दूसरों के साथ व्यवहार करने लगते हैं, तो आप अपने व्यवहार से दूसरे अपरिचित लोगों को अपना मित्र भी बना सकते हैं और शत्रु भी।

यदि आपके पूर्व जन्मों के संस्कार अच्छे हैं, वर्तमान में माता-पिता भी अच्छे मिले हैं, उन्होंने आपको सभ्यता नम्रता सेवा अनुशासन इत्यादि अच्छे गुण सिखाए हैं। उनके द्वारा सिखाने पर, आपने भी उत्तम गुणों को धारण करने का पुरुषार्थ किया है। आपके पास पड़ोस के लोग भी सच्चरित्र हैं। आपके स्कूल कॉलेज गुरुकुल के अध्यापक शिक्षक भी अच्छे सज्जन व्यक्ति हैं। आपका मित्र मंडल भी अच्छा है। बुराइयों से दूर है। आपको अच्छी प्रेरणा देता है। और सोशल मीडिया आदि की बुराइयों से भी आप बचे हुए हैं, एक चरित्रवान व्यक्ति के रूप में समाज में आपकी प्रतिष्ठा है, इत्यादि अनेक प्रकार से आपने अपने जीवन को तपाया है, तपस्या की है। पूर्वोक्त श्रेष्ठ गुणों को धारण करके अपने व्यवहार को उत्तम बनाया है।

परंतु यदि ऐसा नहीं हुआ, अर्थात आपके पूर्व जन्मों के संस्कार भी अच्छे नहीं हैं, वर्तमान में आपको माता पिता ने भी कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं दिया, अथवा उनके द्वारा प्रशिक्षण दिए जाने पर भी आपने अपने जीवन में उत्तम गुणों को धारण नहीं किया। पड़ोसी मित्र मंडल शिक्षक अध्यापक गुरुजनों से भी आपने कुछ विशेष नहीं सीखा, और आपका व्यवहार ठीक नहीं बन पाया। उसमें अनेक प्रकार के अन्याय छल कपट झूठ धोखा इत्यादि दोष हैं। इन दोषों के कारण आपका व्यवहार बिगड़ा हुआ है। तो इस बिगड़े हुए व्यवहार के कारण आप अपने वर्तमान मित्रों को भी अपना शत्रु बना लेंगे। जो लोग आपको आज सहयोग दे रहे हैं, उनसे आप बहुत कुछ लाभ लेकर सुख से अपना जीवन जी रहे हैं। यदि आपने उनके साथ दुर्व्यवहार किया, तो वे भी कुछ समय तक आपकी असभ्यता को सहन करेंगे। आपको सुधरने का अवसर देंगे। ➡

देवयज्ञ अग्निहोत्र का करना मनुष्य का पुनीत सर्वहितकारी कर्तव्य

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

मनुष्य मननशील प्राणी को कहते हैं। मननशील होने से ही दो पाये प्राणी की मनुष्य संज्ञा है। मननशीलता का गुण जीवात्मा के चेतन होने से मनुष्य रूपी प्राणी को प्राप्त हुआ है। जड़ पदार्थों को सुख व दुख तथा शीत व ग्रीष्म का ज्ञान नहीं होता। मनुष्य का आत्मा ज्ञान प्राप्ति तथा कर्म करने की शक्ति व सामर्थ्य से युक्त होता है। अपने ज्ञान को बढ़ाना तथा ज्ञान के अनुरूप सत्कर्मों को करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य होता है। सत्ज्ञान की प्राप्ति करना ही मनुष्य का सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य व पुरुषार्थ है। मध्यकाल में मनुष्य के ज्ञान प्राप्ति के साधन प्राय: अवरुद्ध थे। सामाजिक अंधविश्वासों व मिथ्या धार्मिक धारणाओं के कारण स्त्री तथा जन्मना शूद्रों की शिक्षा प्राप्ति पर तो प्रतिबन्ध लगे हुए थे ही, अन्य जन्मना वर्णों व जातियों में भी शिक्षा का उचित व उपयुक्त प्रचार नहीं था। ऐसा नहीं था कि हमारे देश में ज्ञान की पुस्तकें व ज्ञानी पुरुष न रहे हों, परन्तु अज्ञानता, अंधविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों तथा अज्ञानयुक्त परम्पराओं के कारण शिक्षा व अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था नहीं थी।

ऋषि दयानन्द ने टंकारा-गुजरात में जन्म लेकर तथा ईश्वर के सत्यस्वरूप तथा मृत्यु पर विजय प्राप्ति का सत्संकल्प एवं लक्ष्य लेकर ज्ञान प्राप्ति व उसकी खोज का कार्य लिया और 38 वर्ष की वय मे 12 वर्ष व उससे अधिक वर्षों की निरन्तर खोज व संघर्ष के बाद वह एक समाधि को प्राप्त योगी बने एवं सब सत्य विद्याओं से युक्त ईश्वरीय ज्ञान के ग्रंथ वेदों के मर्मज्ञ विद्वान वा ऋषि भी बने। उन्होंने अपने विवेक ज्ञान से जाना था कि प्रत्येक मनुष्य की आत्मा की ज्ञान प्राप्त कराकर पूर्ण उन्नति करना ही मुख्य उद्देश्य व कर्तव्य है। आत्मा की उन्नति को प्राप्त होकर सद्ज्ञान के अनुरूप ईश्वरोपासना, देवयज्ञ सहित सभी पंचमहायज्ञों को करते हुए देश व समाज की उन्नति के कार्यों को करना सभी सुधी मनुष्यों वा स्त्री-पुरुषों का कर्तव्य व धर्म होता है। इस आत्मज्ञान रूपी बोध को प्राप्त होकर व अपने गुरु प्रज्ञाचक्षु दंडी स्वामी विरजानंद सरस्वती की प्रेरणा से वह देश व विश्व का धार्मिक एवं सामाजिक सुधार करने सहित सद्ज्ञान की प्राप्ति की दृष्टि से देश की उन्नति करने के लिये क्रियात्मक सामाजिक जीवन में प्रविष्ट हुए थे।

ऋषि दयानन्द ने वेदों पर आधारित सभी मान्यताओं व सिद्धान्तों सहित प्रचलित विचारधाराओं आदि की भी परीक्षा व समीक्षा की थी। ऐसा करते हुए उन्हें मनुस्मृति आदि ग्रंथों से आर्यों व उत्तम कोटि के सदाचारी धार्मिक मनुष्यों के पांच महान कर्तव्यों जिन्हें उन्हें प्रतिदिन करना होता है, उन पंचमहायज्ञों का बोध व ज्ञान प्राप्त हुआ था। उन्होंने इन पंचमहायज्ञों को मनुष्य के ज्ञान व कर्मों की दृष्टि से उन्नति में महत्वपूर्ण पाया था। इन पंचमहायज्ञों का विधान उन्होंने सामयिक लोगों सहित आर्यों व

महायज्ञ संध्या वा ब्रह्मयज्ञ करना मनुष्य का कर्तव्य एवं धर्म दोनों है। इसे न करने से पाप लगता है व मनुष्य कृतघ्न सिद्ध होता है। मनुष्य का शरीर तथा शरीर के सभी अवयव जो कि किसी के द्वारा बनाये नहीं जा सकते, उन्हें परमात्मा ही बनाकर हमें नि:शुल्क प्रदान करता है। हमें जीवन में जो सुख मिलते हैं उनका सबका आधार व कारण भी परमात्मा की कृपा ही होती है। हमारी श्वास प्रणाली को परमात्मा व उसकी व्यवस्था ही चला रही है। अतः मनुष्यों पर परमात्मा के असंख्य उपकार सिद्ध होते हैं। उन उपकारों को स्मरण कर उस परमात्मा का धन्यवाद व कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिये ही संध्या करने का विधान है। ऐसा करने से मनुष्य कृतघ्नता के पाप से बचते हैं और संध्या में ईश्वर की जो स्तुति, प्रार्थना व उपासना सहित ध्यान किया जाता है उससे अनेकानेक लाभों को मनुष्य प्राप्त कर सुखी व उन्नति को प्राप्त होते हैं। संध्या करने से मनुष्य ज्ञानी एवं कर्मशील दोनों ही बनता है। संध्या करने से मनुष्य ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानकर व उसे प्राप्त होकर अपने मनुष्य जीवन को सफल करता है। हमें यह ध्यान रखना चाहिये वेद एवं वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करना संध्या का अनिवार्य अंग है।

वेदानुयायियों की भावी पीढ़ियों के लिये जिसमें प्रथम स्थान पर संध्या व ब्रह्मयज्ञ प्रतिष्ठित है, पंचमहायज्ञ विधि की रचना कर किया। पंचमहायज्ञों में दूसरे स्थान पर देवयज्ञ अग्निहोत्र, तीसरे व चौथे स्थान पर पितृयज्ञ और अतिथियज्ञ तथा पांचवें स्थान पर बलिवैश्वदेवयज्ञ प्रतिष्ठित हैं। यद्यपि इन पांच महायज्ञों का मनुस्मृति ग्रंथ में विधान था परन्तु मनुस्मृति का समुचित अध्ययन-अध्यापन न होने से समाज व हमारे पंडित वर्ग को इनका न तो ज्ञान था और न ही किसी को इसको करने की विधि व पद्धति का ही ज्ञान था। ऋषि दयानन्द ने इस गुरुतर कार्य को किया। उन्होंने मनुस्मृति में पंचमहायज्ञों के विधान का प्रकाश कर उसका प्रचार ही किया अपितु प्राचीन शास्त्रीय ग्रंथों के आधार पर उनका ही अनुगमन करते हुए इनको करने की शास्त्रीय पद्धतियों का निर्माण व प्रणयन भी किया।

प्रथम महायज्ञ संध्या वा ब्रह्मयज्ञ करना मनुष्य का कर्तव्य एवं धर्म दोनों है। इसे न करने से पाप लगता है व मनुष्य कृतघ्न सिद्ध होता है। इसका कारण है कि परमात्मा ने मनुष्यों व मनुष्य आदि प्राणियों की जीवात्माओं के लिये ही इस विशाल सृष्टि की रचना की है। मनुष्यों को जन्म भी परमात्मा ही देता है। मनुष्य का शरीर तथा शरीर के सभी अवयव जो कि किसी के द्वारा बनाये नहीं जा सकते, उन्हें परमात्मा ही बनाकर हमें निःशुल्क प्रदान करता है। हमें जीवन में जो सुख मिलते हैं उनका सबका आधार व कारण भी परमात्मा की कृपा ही होती है। हमारी श्वास प्रणाली को परमात्मा व उसकी व्यवस्था ही चला रही है। अतः मनुष्यों पर परमात्मा के असंख्य उपकार सिद्ध होते हैं। उन उपकारों को स्मरण कर उस परमात्मा का धन्यवाद व कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिये ही संध्या करने का विधान है। ऐसा करने से मनुष्य कृतघ्नता के पाप से बचते हैं और संध्या में ईश्वर की जो स्तुति, प्रार्थना व उपासना सहित ध्यान किया जाता है उससे अनेकानेक लाभों को मनुष्य प्राप्त कर सुखी व उन्नति को प्राप्त होते हैं। संध्या करने से मनुष्य ज्ञानी एवं कर्मशील दोनों ही बनता है। संध्या करने से मनुष्य ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानकर व उसे प्राप्त होकर अपने मनुष्य जीवन को सफल करता है।

पंचमहायज्ञों में दूसरा यज्ञ देवयज्ञ अग्निहोत्र होता है। इसको करना भी सब गृहस्थ मनुष्यों का कर्तव्य होता है। यह प्रश्न हो सकता है कि देवयज्ञ करने का उद्देश्य क्या है? इसका उत्तर है कि मनुष्य अपना जीवनयापन करता है तो इसके निमित्त से वायु सहित जल एवं भूमि का प्रदूषण होता है। अनेक सूक्ष्म व छोटे कीटाणु व जन्तु अग्नि के सम्पर्क में आकर व हमारे पैरों के कुचल कर व दब कर कष्ट उठाते व मृत्यु को भी प्राप्त होते हैं। हम जो श्वास प्रश्वास लेते हैं उससे भी वायु प्रदूषित होती है। हमारे भोजन के बनाने व निवास स्थान के बनाने से भी वायु प्रदूषण सहित जल एवं भूमि में विकार होते हैं। इन सबको दूर करने का एक ही साधन व उपाय है और वह है देवयज्ञ अग्निहोत्र का प्रतिदिन दो बार करना। अग्निहोत्र से इतर वायु प्रदूषण आदि को दूर करने का मनुष्य के पास कोई उत्तम साधन नहीं है। वायु व जल आदि में विकार होने पर हम अस्वस्थ हो जाते हैं। हमारे कारण होने वाले प्रदूषण आदि से अन्य प्राणियों को भी रोग व स्वास्थ्य आदि की हानि होती है। अतः वायु को शुद्ध रखना और हमारे कारण अशुद्ध हुई वायु को शुद्ध करना हमारा कर्तव्य होता है। इस कर्तव्य की पूर्ति अग्निहोत्र देवयज्ञ करने से होती है। इसमें हम एक यज्ञकुंड बनाकर उसमें शुद्ध समिधाओं वा काष्ठों का दहन कर उस पर वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ गोघृत तथा वनों से प्राप्त रोगनाशक ओषधियों व वनस्पतियों आदि की आहुतियां देते हैं। हमारी यज्ञ की सामग्री में देशी शक्कर तथा पुष्टि करने वाले सूखे फल आदि भी होते हैं जो जलने पर सूक्ष्म होकर आकाश और वायु में फैल कर वायु के दुर्गंध एवं प्रदूषण को दूर करने सहित सभी प्राणियों को लाभ पहुंचाते हैं।

➔➔

अनमोल वचन

- अगर आर्य समाज न होता तो भारत की क्या दशा हुई होती इसकी कल्पना करना भी भयावह है। आर्यसमाज का जिस समय काम शुरू हुआ था कांग्रेस का कहीं पता ही नहीं था स्वराज्य का प्रथम उद्घोष महर्षि दयानन्द ने ही किया था। यह भारतीय समाज की पटरी से उतरी गाड़ी को फिर से पटरी पर लाने का कार्य किया। **–अटल बिहारी बाजपेयी**

- महर्षि दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे। स्वतंत्रता के संग्राम में आर्य समाजियों का बड़ा हाथ रहा है। महर्षि जी का लिखा अमरग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश हिन्दू जाति की रगों में क्रांतिकारी का संचार करने वाला है। सत्यार्थ प्रकाश की विद्यामनता मे कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं बघार सकता। **– स्वातन्त्र्य वीर सावरकर**

वेदों में वर्णित पुरुष सूक्त पर भ्रान्ति निवारण

वेदों में पुरुष सूक्त में पुरुष नामक ईश्वर से समग्र सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है। वही मनुष्य समाज की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए उसे चार विभागों में बांटे गए है। ये विभाग हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद 10/90/12, यजुर्वेद 31/11 (ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्य: कृत:। ऊरू तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्यां शूद्रो अजायत) एवं अथर्ववेद 19/6/6 (ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्योऽभवत्। मध्यं तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्यां शूद्रो अजायत) को वर्ण व्यवस्था के आधारभूत वेद मंत्र माना जाता हैं। इन वेद मंत्रों का अर्थ है कि ब्राह्मण इस मनुष्य समाज का मुख है, क्षत्रिय भुजायें, वैश्य जंघाएं है और पैरों के लिए शूद्र बना है। इस वेद मंत्र का निष्कर्ष है–

- इस मन्त्र में मनुष्य समाज की मनुष्य शरीर से उपमा दी गई है। जैसे मनुष्य शरीर में मुख, हाथ, पेट और पैर होते हैं, वैसे ही मनुष्य समाज में भी होते हैं। जैसे मनुष्य शरीर का सभी अंग मिलकर उसकी रचना करते हैं, वैसे ही मनुष्य समाज का भी सभी अंग मिलकर समाज शरीर का निर्माण करते हैं।
- ब्राह्मण को समाज का मुख कहा गया है। मुख में आंख, कान, नाक, रसना और त्वचा ये पांच ज्ञानेन्द्रियां एकत्र हैं। शेष शरीर में केवल त्वचा ही एक ज्ञानेन्द्रिय है। इस प्रकार मुख में शरीर के अन्य अंगों की अपेक्षा पांच गुणा अर्थात बहुत अधिक ज्ञान रहना चाहिए। ब्राह्मण समाज का मुख है, जो अपने ज्ञान उपदेश द्वारा समाज का कल्याण करता है। जैसे शीत में मुख नग्न रहता हुआ मनुष्य की रक्षा करता है। वैसे ही ब्राह्मण अनेक द्वन्दों को सहते हुए स्वार्थ रहित और परोपकारी रहकर अपने ज्ञान द्वारा समाज का उपकार करता है। समाज के जो लोग मुख की भांति ज्ञानवान, ज्ञान का उपदेष्टा, तपस्वी, सहनशील, स्वार्थहीन और परोपकारी है। वे ब्राह्मण है।
- क्षत्रिय समाज की भुजाएं है। जैसे कोई शरीर पर प्रहार करता है तो भुजाएं उस प्रहार को रोकती है। अपनी शक्ति से शरीर के अन्य अंगों की रक्षा करती हैं। इसी प्रकार से जो अपने भीतर बल की वृद्धि करते हैं और उस बल से समाज की रक्षा करते हैं। वे क्षत्रिय हैं। जो स्वयं कष्ट सहकर, शरीर के किसी भी अंग पर प्रहार, अन्याय और अत्याचार को रोकता है। समाज के जो लोग मृत्यु को आलिंगन करके शत्रुओं के विनाश के लिए सदा उद्यत रहते है। वे क्षत्रिय है।
- वैश्य समाज का मध्य भाग है। जैसे खाये हुए अन्न को ग्रहण का पेट उसका रस बनाकर सम्पूर्ण शरीर को समृद्ध करता है। शरीर को पुष्ट और बल देता है। उसी प्रकार से समाज शरीर के सभी अंगों का भरण–पोषण का भार अपने ऊपर लेने वाला वैश्य कहलाता है। समाज के जो लोग देश–विदेश में जाकर व्यापार कर राष्ट्र को समृद्ध करते है। वे वैश्य है।
- शूद्र समाज रूपी शरीर के पैर है। पैर सारे शरीर को अपने ऊपर उठाये रहते है। पैर शरीर को एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाते हैं। जो लोग ज्ञान आदि विशेष गुण, बल अथवा नेतृत्व आदि गुण, व्यापार आदि गुण अपने अंदर नहीं रखते और इसलिए वे समाज के अन्य अंगों को उनके कार्य में सहयोग करते हैं, उन्हें शूद्र कहते हैं। इस प्रकार से शूद्र राष्ट्र और समाज के उत्थान के लिए अपना सहयोग करते हैं। समाज के जो लोग ज्ञान आदि विशेष गुणों के न होने के कारण समाज की सेवा का कार्य करते है। वे शूद्र है।
- वर्ण विभाजन का आधार ऊंच–नीच का भेद नहीं है। शरीर के अंग एक दूसरे से घृणा नहीं करते। चाहे चोट शरीर के मुख को लगे अथवा पैरों को। पीड़ा सम्पूर्ण शरीर को समान ही होती है। जो लोग अन्याय से होने वाले राष्ट्र के कष्टों को दूर करेंगे वे क्षत्रिय कहलायेंगे, जो लोग संपत्ति के अभाव से होने वाले राष्ट्र के कष्ट को दूर करेंगे वे वैश्य कहलायेंगे। जो लोग इन तीनों कामों में से कोई भी न कर सकेंगे, वे इन तीनों वर्णों को सेवा रूप में सहयोग कर सकेंगे। उन्हें शूद्र कहा जायेगा। इस प्रकार से पुरुष सूक्त मनुष्यों की योग्यता के आधार पर विभाजन करता है। न कि जन्म के आधार पर।

वेदों में शूद्रों के लिए अत्यंत प्रशंसाजनक वचन है– वेदों में 'शूद्र' शब्द लगभग बीस बार आया है। कहीं भी उसका अपमानजनक अर्थों में प्रयोग नहीं हुआ है और वेदों में किसी भी स्थान पर शूद्र के जन्म से अछूत होने, उन्हें वेदाध्ययन से वंचित रखने, उनका दर्जा कम होने या उन्हें यज्ञादि से अलग रखने का कोई उल्लेख नहीं है। ■■

माघे सन्ति त्रयो गुणाः

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

संस्कृत महाकाव्य परम्परायां भारविकालिदासयोरन्तरं सर्वोत्कृष्टत्वेन महाकवेः श्रीमाघस्य नामग्रहणं सादरं सम्पद्यते। अनेन महाकाविना पूर्ववर्तिनयोः द्वयोः वैशिष्ट्यं स्वरचनायां समादृत्य परम्पराभक्तिः प्रकटिता, स्वप्रतिभा विलासेन लालित्यमुत्पाद्य कविर्दण्डीं प्रति स्वश्रद्धा प्रदर्शिता च। अत एव केनापि आलोकप्रवरेण कालिदास भारविदण्डिप्रमुखानां गुणानां माघे एकत्र सत्ता स्वीकृता, अस्य शिशुपालवधम् इत्याख्ये महाकाव्ये। यथा-

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

कालिदासस्य उपमा भागीरथी, भारवेः अर्थगुरुता यमुना, दण्डिनो हर्षस्य वा पदलालित्यं सरस्वती, तीर्थराजसदृशे सकलकलादक्षे कविराजेऽत्रतीर्थराजो विराजत एव। मन्ये उपमाप्रयोगे कालिदासवत् माघे उपमावैशिष्टयम् नासीत् तथा अर्थगौरवे भारविसदृशं माघः निपुणः नासीत् दण्डिसदृशः संक्षिप्तपदेषु माधुर्ययोजने माघः सक्षमः नासीत्, तथापि कमनीयोपमातकृतिभिरलङ्कृता तदीया कविताकामिनी अर्थगौरव भरेण शब्दशय्यायां विराजतेतराम्। नात्र मनागति शब्दविपर्ययं विधातुं शक्यते केनापि। अत एव कलामर्मज्ञेन धर्मपालेन भणिता इयं कि उक्तिः अद्यापि सत्यप्राणतां प्रमाणयति यत्-

माघेन विघ्नितोत्साहा नोत्सहन्ते पदक्रमे।
स्मरन्तो भारवेरेव कवयः कपयो यथा॥

अस्य महाकवेः शिशुपालवधम् महाकाव्यम् लक्षणग्रंथ- काराणां मतेन सर्वविध शास्त्रय्वैदुष्यभूषितम्, शब्दशास्त्रीयज्ञानेना नुस्यूतम्, सर्वलक्षण- समन्वितञ्च विराजतेतराम्। यतो हि- 'सर्वबन्धों महाकाव्यम् तत्रैको नायकः सुरः' इति लक्षणमनुसृत्य साऽस्मिन् योगीराज श्रीकृष्णः सुरनायकः प्रतिनायकः चेदिराट् शिशुपालः। येत्र प्रधानो वीररसः शान्तरसो वा, प्रसंगप्राप्तस्य श्रृंगाररसस्यापि सन्निवेशः समीचीन एव। अन्यत्र क्वचित् अद्भुतरसः, रौद्ररसः अपि पाठकानां दृष्टिम् आवर्जयति एव। अतः प्रसिद्ध टीकाकारेण मल्लिनाथेन उक्तं यत्-

नेताऽस्मिन् यदुनंदनः स भगवान् वीरप्रधानो रसः
श्रृङ्गारादिभिरङ्गवान् विजयते पूर्णा पुनर्वर्णना।
इन्द्रप्रस्थगमाद्युपायविषयैश्चैद्याऽवसादः फलम्
धन्यो माघकविर्वदन्तु कृतिनस्तत्सूक्तिसंसेवनात्॥

माघकाव्ये कथावस्तुविभाजनं क्रमशः कृतं विद्यते। विविधच्छन्दासां, शब्दार्था लंकाराणां च यथास्थानं सम्यक्तया सन्निवेशनम् अस्य महाकवेः कलाप्रियतां प्रकटयति। नानावृत्तमयः क्वाऽपि सर्गः कंचन दृश्यते इति लक्षणेन अनेन चतुर्थसर्गस्य रचना कृता। षड्ऋतुवर्णनम्, संध्यासूर्योदयोः शोभावर्णनम् अस्य महाकवित्वम् आचार्यत्वं च प्रतिपादयति। यद्यपि श्रीमाघः पूर्ववर्तिनां कालिदासप्रमुखानां विशेषतया भारवेः सर्वथाऽनुकरणं चक्रे, तथापि स्वकीयया प्रतिभया इदं शिशुपालवधम् सर्वानतिशेते इति न कस्यापि विप्रतिपत्तिः। यत उच्वते- 'नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते।' अथ च- मेघे माघे गतं वयः। एवमेव तावभ्दा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः इत्यादयः सूक्तयः प्रचलिताः प्रसिद्धा एव। इत्थं यादृग् उत्कृष्टं शब्दार्थज्ञानं माघकाव्यस्याऽध्ययनेन सम्भाव्यते, तादृग् इतरकाव्यानुशीलनेन दुर्लभमेव। यद्यपि सरस्वत्या वाङ्मयभाण्डागारस्य नास्ति इयत्ता, तथापि इदमपि सत्यं यत् माघकाव्ये अधिकांशतया प्रयोगार्हाः शब्दाः मुप्रयुक्ताः प्रकामं दृष्टिपथमायान्ति। अत्र केचन श्लोकाः महाकवेः गुणत्रयपाण्डित्यबोधाय उदाह्रियन्ते प्रसंगवशात्। माघस्यैकाप्रशस्यतरा शास्त्रीयोपमा विद्यते।

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **जड़ :** जो वस्तु ज्ञानादि गुणों से रहित है, उसको 'जड़' कहते हैं।
- **चेतन :** जो पदार्थ ज्ञानादि गुणों से युक्त है, उसको 'चेतन' कहते हैं।
- **भावना :** जो जैसी चीज हो, उसमें विचार से वैसा ही निश्चय करना कि जिसका विषय भ्रमरहित हो अर्थात् जैसे को तैसा ही समझ लेना, उसको 'भावना' कहते हैं।
- **अभावना :** जो भावना से उलटी हो अर्थात् जो मिथ्याज्ञान से अन्य में अन्य निश्चय मान लेना है। जैसे- जड़ में चेतन और चेतन में जड़ का निश्चय कर लेते हैं, उसको 'अभावना' कहते हैं।

पं. रामचन्द्र देहलवी शास्त्रार्थ महारथी

स्मृति : 3 फरवरी
शत्-शत् नमन

आर्य समाज के विद्वान पंडित रामचन्द्र देहलवी पुरानी दिल्ली के फव्वारे पर खुलेआम विद्वानों से शास्त्रार्थ किया करते थे। हमारे दुर्भाग्य से या सौभाग्य से भारत में कई मतावलम्बी हैं। उनमें मुख्य रूप से ईसाई, मुसलमान, आर्यसमाजी व सनातनधर्मी हैं। बाकी और जो हैं उनकी इतनी मुख्यता नहीं है। मुसलमानों का, खुदा की इबादत करने का अपना एक तरीका है। ईसाइयों व मुसलमानों में कोई विशेष भेद नहीं है, थोड़ा ही भेद है इसलिए मैं उन्हें मुसलमानों से जुदा नहीं करता हूं। सनातन धर्म और आर्यसमाज में भी कोई फर्क नहीं है। हम चाहते हैं कि जो थोड़ा सा भेद उनमें और हममें है वह न रहे। आर्य जगत में पंडित रामचंद्र जी देहलवी गजब के तार्किक थे, सभी मजहब के लोगों के साथ शास्त्रार्थ किये और सभी को अपने तार्किक शक्ति से पछाड़ा- एक शास्त्रार्थ में मौलाना सनाउल्ला ने कहा-पंडित जी जहां से आपके राम खत्म होते हैं, वहीं से हमारे मुहम्मद साहब शुरू होते हैं इसलिए अब आप को राम का नाम छोड़कर मुहम्मद का जाप करना चाहिए। देहलवी जी बोले- शाबास मौलाना साहब शाबास! मरहबा!! किन्तु मौलाना साहब आप बीच में ही क्यों रुक गए- आगे भी कहो। मौलाना बोले-आगे क्या है यह आप ही कह दीजिए। पंडित जी बोले- जहां आपके मोहम्मद साहब समाप्त होते हैं, वहीं से दयानंद शुरू हो जाते हैं, इसलिए मुहम्मद साहब को छोड़ कर दयानंद के गीत गाओ। आर्य समाज को पुन: शास्त्रार्थ आरंभ करना होगा।

स्वामी श्रद्धानन्द

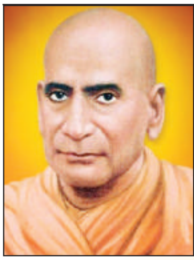

जन्म : 13 फरवरी
शत्-शत् नमन

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म पंजाब प्रांत के जालंधर जिले के तलवान ग्राम में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता, लाला नानक चंद, ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा शासित यूनाइटेड प्रोविंस में पुलिस अधिकारी थे। उनके बचपन का नाम वृहस्पति और मुंशीराम था, किंतु मुंशीराम सरल होने के कारण अधिक प्रचलित हुआ। पिता का ट्रांसफर अलग-अलग स्थानों पर होने के कारण उनकी आरम्भिक शिक्षा अच्छी प्रकार नहीं हो सकी। लाहौर और जालंधर उनके मुख्य कार्यस्थल रहे। एक बार आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक-धर्म के प्रचारार्थ बरेली पहुंचे। पुलिस अधिकारी नानकचंद अपने पुत्र मुंशीराम को साथ लेकर स्वामी दयानन्द का प्रवचन सुनने पहुंचे। युवावस्था तक मुंशीराम ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते थे। लेकिन स्वामी दयानन्द जी के तर्कों और आशीर्वाद ने मुंशीराम को दृढ़ ईश्वर विश्वासी तथा वैदिक धर्म का अनन्य भक्त बना दिया। आर्य समाज में वे बहुत ही सक्रिय रहते। वह गुरुकुल कांगड़ी व अन्य कई गुरुकुलों के संस्थापक थे। वे शुद्धि आंदोलन के प्रणेता थे। 23 दिसम्बर को उन पर मधान्ध द्वारा वार कर दिया गया जिससे वह शहीद हो गए। स्वामी जी की याद में भव्य रैली 25 दिसम्बर को निकाली जाती है।

पं. चमूपति एम.ए.

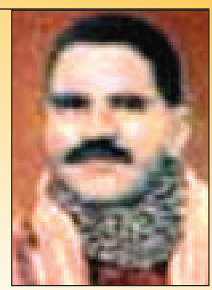

जन्म : 15 फरवरी
शत्-शत् नमन

पंडित चमूपति का जन्म 15 फरवरी, 1863 ई. में बहावलपुर (अब पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता का नाम मेहता बसंदा राम था। बालक का नाम उन्होंने चम्पतराय रखा था। पं. चमूपति जी ने मिडिल परीक्षा में अपनी रियासत में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। मैट्रिक की परीक्षा पास करके वे बहावलपुर के सादिक ईजर्टन कॉलेज में प्रविष्ट हो गए। कॉलेज में उन्होंने उर्दू काव्य लिखना आरम्भ कर दिया। सर्वप्रथम उन्होंने सिखों के धर्मग्रंथ 'जपजी' का उर्दू में काव्यानुवाद किया। एमए की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर आप उसी रियासत के एक मिडिल स्कूल में अध्यापक नियुक्त हो गये। मेहता चम्पतराय के विचारों में (एमए) करने के उपरांत भी स्थिरता नहीं आ पाई थी। प्रारंभ में वे सिख धर्म की ओर आकृष्ट हुए तो फिर शनैः शनैः नास्तिक बन गये। इसी बीच उन्हें स्वामी दयानंद के ग्रंथों के अध्ययन का सुयोग सुलभ हुआ। परिणाम स्वरूप ईश्वर के प्रति उनकी आस्था तो जम गई किंतु वे शंकर वेदांत की ओर झुकने लगे। 15 जून 1939 को उनका स्वर्गवास हो गया। पंडित जी ने अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया। पं. चमूपति असाधारण कोटि के विद्वान थे। हिंदू, उर्दू, और अंग्रेजी इन तीनों विषयों पर उनका समान अधिकार था।

रक्त साक्षी पं. लेखराम

जयंती : 17 फरवरी
शत्-शत् नमन

आर्य मुसाफिर पं. लेखराम का जन्म 8 चैत्र, संवत् 1915 (1858 ई.) को झेलम जिला के तहसील चकवाल के सैदपुर गांव (अब पाकिस्तान में) में हुआ था। उनके पिता का नाम तारा सिंह एवं माता का नाम भाग भरी था। उन्होंने आरंभ में उर्दू–फारसी पढ़ी। बचपन से ही स्वाभिमानी और दृढ विचारों के थे। एक बार उनको पाठशाला में प्यास लगी, मौलवी से घर जाकर पानी पीने की इजाजत मांगी। मौलवी ने जूठे मटके से पानी पीने को कहां। उसने न दोबारा मौलवी से घर जाने की इजाजत मांगी और न ही जूठा पानी पिया। सारा दिन प्यासा ही बिता दिया। मुंशी कन्हैयालाल अलाख्धारी की पुस्तकों से उनको स्वामी दयानंद सरस्वती का पता चला। लेखराम जी ने ऋषि दयानंद के सभी ग्रंथों का स्वाध्याय आरंभ कर दिया। सत्रह वर्ष की उम्र में वे सन् 1875 में पेशावर पुलिस में भरती हुए और उन्नति करके सारजेंट बन गए। इन दिनों इन पर 'गीता' का बड़ा प्रभाव था। स्वामी दयानंद सरस्वती से प्रभावित होकर उन्होंने 1937 में पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना की। 17 मई सन् 1880 को उन्होंने अजमेर में स्वामी जी से भेंट की। लेखराम जी ने सन् 1884 में पुलिस की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। अब उनका सारा समय वैदिक धर्मप्रचार में लगने लगा। स्वामी पर उन द्वारा लिखा जीवनवृत्त पढ़ने योग्य है। लेखन के दौरान उन पर वार किया गया था जिससे उनका प्राणांत हो गया। उनका कहना था आर्यसमाज से तहरीर और तकरीर का कार्य बंद नहीं होना चाहिए।

स्मृति : 26 फरवरी
शत्-शत् नमन

वीर सावरकर

वीर सावरकर का जन्म भारत के महाराष्ट्र राज्य के नाशिक जिले के भांगुर गांव में हुआ था इनके पिता का नाम दामोदर पंत सावरकर और माता का नाम राधाबाई था जब वीर सावरकर महज 9 साल के ही थे तो इनकी माता का हैजे की बीमारी से देहांत हो गया था और फिर माता की मृत्यु के पश्चात 7 साल बाद प्लेग जैसी भयंकर बीमारी के फैलने के कारण इनके पिता भी इस दुनिया को छोड़कर चले गये। इनका लालन पालन इनके बड़े भाई गणेश और नारायण दामोदर सावरकर तथा बहन नैनाबाई की देखरेख में हुआ। बचपन से वीर सावरकर पढ़ने–लिखने में तेज थे जिसके चलते आर्थिक तंगी के बावजूद इनके भाई ने इन्हें पढ़ने के लिए स्कूल भेजा। 1901 में वीर सावरकर ने शिवाजी हाईस्कूल से नासिक से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। बचपन से ही लिखने का शौक रखने वाले वीर सावरकर ने अपने पढ़ाई के दौरान कविताएं भी लिखना शुरू कर दिया था। इनका विवाह 1901 में ही यमुनाबाई के साथ हुआ जिसके बाद इनके आगे की पढ़ाई का खर्च की जिम्मेदारी इनके ससुर ने उठाया। वीर सावरकर ने पहली बार 1905 में दशहरा के दिन विदेशी कपड़ों की होली चलायी जो की एक तरह से पूरे देश में अंग्रेजी वस्तुओं के विरोध की आग पूरे देश में फैल गयी। अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ भारत को आजाद कराने के लिए उन्हें अंडमान (कालापानी) में घोर यातनाएं झेलनी पड़ी, परंतु वह अपने पथ से कभी विचलित नहीं हुए।

क्रांतिकारी योद्धा चंद्रशेखर आजाद

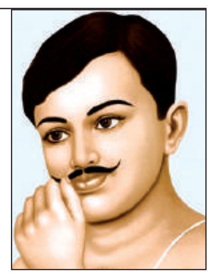

बलिदान : 27 फरवरी
शत्-शत् नमन

क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को उन्नाव, उत्तर प्रदेश में हुआ था। आजाद का वास्तविक नाम चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी था। इनका निधन 1931 में फरवरी के अंतिम सप्ताह में हुआ! जब आजाद गणेश शंकर विद्यार्थी से मिलने सीतापुर जेल गए तो विद्यार्थी ने उन्हें इलाहाबाद जाकर जवाहर लाल नेहरू से मिलने को कहा, चंद्रशेखर आजाद जब नेहरू से सरदार भगत सिंह की फांसी रुकवाने के लिए मिलने आनंद भवन गए तो उन्होंने चंद्रशेखर की बात सुनने से भी इन्कार कर दिया। गुस्से में वहां से निकल-कर चंद्रशेखर आजाद अपने साथी सुखदेव राज के साथ एल्फ्रेड पार्क चले गये। वे सुखदेव के साथ आगामी योजनाओं के विषय में बात ही कर रहे थे कि पुलिस ने उन्हें घेर लिया, अपने बचाव में उन्होंने अपनी जेब से पिस्तौल निकालकर गोलियां दागनी शुरू कर दी। दोनों ओर से गोलीबारी हुई। जब चंद्रशेखर के पास मात्र एक ही गोली रह गई तो उन्हें सामना करना मुश्किल लगा। आजाद ने पहले ही प्रण किया था कि वह कभी भी जिंदा पुलिस के हाथ नहीं आएंगे। इसी प्रण को निभाते हुए उन्होंने वह बची हुई गोली खुद को मार ली। जिस पार्क में उनका निधन हुआ था उसका नाम परिवर्तित कर 'चंद्रशेखर आजाद पार्क' और मध्य प्रदेश में जिस गांव में वह रहे थे उसका धिमारपुर नाम बदलकर आजादपुरा रखा गया।

वसंत पंचमी पर्व का महत्व

वसंत ऋतु आते ही प्रकृति का कण-कण खिल उठता है। मानव तो क्या पशु-पक्षी तक उल्लास से भर जाते हैं। हर दिन नयी उमंग से सूर्योदय होता है और नयी चेतना प्रदान कर अगले दिन फिर आने का आश्वासन देकर चला जाता है। यों तो माघ का यह पूरा मास ही उत्साह देने वाला है, पर वसंत पंचमी का पर्व भारतीय जनजीवन को अनेक तरह से प्रभावित करता है। प्राचीनकाल से इसे ज्ञान और कला की देवी मां सरस्वती का जन्मदिवस माना जाता है। जो शिक्षाविद भारत और भारतीयता से प्रेम करते हैं, वे इस दिन मां शारदे की पूजा कर उनसे और अधिक ज्ञानवान होने की प्रार्थना करते हैं। कलाकारों का तो कहना ही क्या? जो महत्व सैनिकों के लिए अपने शस्त्रों और विजयादशमी का है, जो विद्वानों के लिए अपनी पुस्तकों और व्यास पूर्णिमा का है, जो व्यापारियों के लिए अपने तराजू, बाट, बहीखातों और दीपावली का है, वही महत्व कलाकारों के लिए वसंत पंचमी का है। चाहे वे कवि हों या लेखक, गायक हों या वादक, नाटककार हों या नृत्यकार, सब दिन का प्रारम्भ अपने उपकरणों की पूजा और मां सरस्वती की वंदना से करते हैं। वसंत पञ्चमी के समय सरसों के पीले-पीले फूलों से आच्छादित धरती की छटा देखते ही बनती है।

पौराणिक महत्व : इसके साथ ही यह पर्व हमें अतीत की अनेक प्रेरक घटनाओं की भी याद दिलाता है। सर्वप्रथम तो यह हमें त्रेता युग से जोड़ती है। रावण द्वारा सीता के हरण के बाद श्रीराम उसकी खोज में दक्षिण की ओर बढ़े। इसमें जिन स्थानों पर वे गये, उनमें दण्डकारण्य भी था। यहीं शबरी नामक भीलनी रहती थी। जब राम उसकी कुटिया में पधारे, तो वह सुध-बुध खो बैठी और चख-चखकर मीठे बेर राम जी को खिलाने लगी। दंडकारण्य का वह क्षेत्र इन दिनों गुजरात और मध्य प्रदेश में फैला है। गुजरात के डांग जिले में वह स्थान है जहां शबरी मां का आश्रम था। वसंत पंचमी के दिन ही रामचंद्र जी वहां आये थे। उस क्षेत्र के वनवासी आज भी एक शिला को पूजते हैं, वहां शबरी माता का मंदिर भी है।

ऐतिहासिक महत्व : वसंत पंचमी का दिन हमें पृथ्वीराज चौहान की भी याद दिलाता है। उन्होंने विदेशी हमलावर मोहम्मद गोरी को 16 बार पराजित किया और उदारता दिखाते हुए हर बार जीवित छोड़ दिया, पर जब सत्रहवीं बार वे पराजित हुए, तो मोहम्मद गोरी ने उन्हें नहीं छोड़ा। वह उन्हें अपने साथ अफगानिस्तान ले गया और उनकी आंखें फोड़ दीं। इसके बाद की घटना तो जगप्रसिद्ध ही है। मोहम्मद गोरी ने मृत्युदंड देने से पूर्व उनके शब्दभेदी बाण का कमाल देखना चाहा। पृथ्वीराज के साथी कवि चंदबरदाई के परामर्श पर गोरी ने ऊंचे स्थान पर बैठकर तवे पर चोट मारकर संकेत किया। तभी चंदबरदाई ने पृथ्वीराज को संदेश दिया।

चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण।
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान॥

अमर बलिदानी वीर हकीकत राय

शत्-शत् नमन

मात्र 14 साल की उम्र में वीर हकीकत राय अपना बलिदान देकर हमेशा के लिए अमर हो गए। वीर हकीकत राय ने अपने धर्म को अपने जीवन से बड़ा माना और धर्म की रक्षा के लिए अपनी जिंदगी को कुर्बान कर दिया। वीर हकीकत राय का जन्म स्यालकोट के एक धनाढ्य परिवार में हुआ था। वह कुशाग्र बुद्धि के थे। चार-पांच वर्ष की आयु में ही उन्होंने इतिहास और संस्कृत का पर्याप्त अध्ययन कर लिया था। उन्हें 10 वर्ष की आयु में फारसी की पढ़ाई के लिए मदरसे में भेजा गया। मदरसे में पढ़ाई के दौरान एक बार उन्हें कक्षा की बागडोर उन्हें संभालने को दी गई। इस पर मदरसे के दूसरे छात्रों ने विरोध कर दिया और वीर हकीकत राय पर धर्म के लेकर तमाम गलत आरोप लगा दिए। बात बढ़ी तो बच्चों के बीच का यह विवाद धर्म की लड़ाई बन गया। मदरसे के जिम्मेदार लोगों ने भी वीर हकीकत राय का पक्ष जानने के बजाए दूसरे बच्चों का पक्ष लिया। यह मामला नगर शासक के पास पहुंचा तो निर्णय सुनाया गया कि बालक अपना धर्म परिवर्तन कर ले अन्यथा इसका वध कर दिया जाएगा। वीर हकीकत राय ने धर्म परिवर्तन के बजाए अपना सिर देना स्वीकार कर लिया। बसंत पंचमी के दिन 14 वर्षीय हकीकत राय को मृत्युदंड दे दिया गया। उनके बलिदान का समाचार सुनकर उनकी पत्नी लक्ष्मी देवी चिता में कूदकर सती हो गईं। लाहौर के पास वीर हकीकत राय की समाधि बनी हुई है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्
मह्यम् दत्वा व्रजत् ब्रह्मलोकम्

बच्चा जब पैदा होता है तो वह रोता हुआ ईश्वर से शिकायत करता है कि हे ईश्वर आपने मुझे कहां भेज दिया? यहां तो मेरी कोई बोली भी नहीं समझता और न मैं किसी की बात समझता।

जब मुझे भूख लगेगी प्यास लगेगी तो कौन मुझे खिलायेगा, कौन पिलायेगा? मैं तो कपड़ा उठा भी नहीं सकता जब ठंड लगेगी तो कौन कपड़ा ओढ़ायेगा कौन पहनायेंगा? तो ईश्वर कहता है कि चिन्ता मत कर मैंने तुझसे पहले तेरी मां को भेजा है वह तेरी बात समझेगी। तुझे खिलायेगी पिलायेगी पहनायेगी, ओढ़ायेगी। ईश्वर की व्यवस्था है कि बच्चा पैदा होने से पहले ही वह उसके भोजन का प्रबंध कर देता है।

बच्चा बाद मे आता है दूध पहले आ जाता है, और जब बच्चे को भूख लगती है तो मां को पता चल जाता है। यदि बच्चे को ठंड लग रही है तो मां की तुरन्त आंख खुल जाती है। ईश्वर ने उसके लिए ऐसा दूध भेजा जिसे गरम या ठंडा करने की आवश्यकता नहीं। अब बच्चा बड़ा होने लगा तो फिर शिकायत करने लगा कि हे ईश्वर अब इस दूध मे मेरा काम नहीं चलता ये तो कम रह जाता है, तो फिर ईश्वर ने कहा कि घबरा मत मैंने उसकी भी व्यवस्था कर दी है।

मैंने तेरे लिए एक और मां गौ माता को भेजा है तू जितना चाहे एक किलो दो किलो खूब पेट भरकर पी। वह तुझे दूध पिलायेगी। अब बच्चा धीरे-धीरे बड़ा हुआ तो फिर शिकायत करने लगा कि भगवान अब मैं बड़ा हो गया हूं अब मेरा दूध से काम नहीं चलता मुझे कुछ ठोस माल चाहिये। ईश्वर फिर बोला कोई बात नहीं मैंने उसकी भी व्यवस्था कर दी है। मैंने तेरे लिए एक और मां धरती माता को भेजा है वह तुझे सब कुछ देगी। गेहूं भी देगी चावल भी देगी। दाल भी देगी। सेब, संतरे, किशमिश आदि भी दे जो जी चाहे खा।

अब बच्चा पांच साल का हो गया तो फिर शिकायत करने लगा कि हे ईश्वर मैंने दूध भी पिया, रोटी भी खाई फल सब्जिया भी खाई खूब खेला-कूदा लेकिन मेरा कुछ बना नहीं ये खाने पीने का काम तो पशु भी करते है फिर मैं भी ऐसा ही रहा। फिर ईश्वर कहता है कि इसके लिए मैंने एक और मां को भेजा है और वह है वेदमाता, जो तुझे मनुष्य बनायेगी। और वह वरदा है वरदान देने वाली है सदा वरदान ही देगी।

यह मां तो कभी-कभी नाराज होकर डांट भी देती है लेकिन वह सदा वरदान देगी। और तेरी इस वेदमाता की मया स्तुता मैं भी स्तुति करता हूं। मैं भी इसकी प्रशंसा करता हूं, तुम इसका स्वाध्याय करो और तदानुकूल आचरण करो तथा प्रचोदयन्तां इसका प्रचार करो क्योंकि जो तुमने जाना है सीखा है वह दूसरों को भी बताओ।

यह वेदमाता द्विजों को पवित्र करने वाली है। यदि तुम ऐसा करोगे तो यह तुम्हे ऐश्वर्य प्रदान करेगी पहला ऐश्वर्य आयु लम्बी आयु मिलेगी। लेकिन आयु लम्बी हो और प्राण शक्ति देखने की, सुनने की, चलने फिरने की, खाने पीने की शक्ति न हो तो लम्बी आयु अभिशाप बन जाती है। इसलिए दूसरा ऐश्वर्य प्राण शक्ति भी मिलेगी। अब ये सब हो और संतान न हो तो भी बेकार इसलिए तीसरा ऐश्वर्य प्रजा उत्तम संतान और चौथा घर मे पशु भी होने चाहिये।

पांचवा ऐश्वर्य कीर्ति यश भी मिलेगा। लोग पैसे के पीछे भागते है लेकिन वेद कहता है छटे नम्बर पर द्रविणं धनं च बलं धन भी मिलेगा और सातवां ऐश्वर्य ब्रह्मवर्च शक्ति भी मिलेगी। इस प्रकार जो मनुष्य वेद का स्वाध्याय करता है और उसके अनुकूल आचरण करता है तो उसे ये सातों ऐश्वर्य मिलते है।

फिर किसी ने पूछा कि भगवान क्या आनन्द भी मिलेगा? तो ईश्वर कहता है कि नहीं तुमको आनन्द नहीं मिलेगा ऐश्वर्य तो मिलेगे इनसे सुख मिलेगा, दु:ख मिलेगा, क्योंकि जन्म होगा और मरण होगा यदि दु:ख और सुख से बचकर आनन्द चाहते हो तो जब तुम इन ऐश्वर्यों को त्याग कर मेरी शरण मे आओगे तब तुम्हे आनन्द मिलेगा।

'मह्यम् दत्वा वर्जत् ब्रह्मलोकम्'

ईसाई धर्मांतरण का एक कुत्सित तरीका

विश्व इतिहास इस बात का प्रबल प्रमाण हैं की हिन्दू समाज सदा से शांतिप्रिय समाज रहा हैं। एक ओर मुस्लिम समाज ने पहले तलवार के बल पर हिन्दुओं को मुस्लमान बनाने की कोशिश करी थी, अब सूफियो की कब्रों पर हिन्दूओं के सर झुकवाकर, लव जिहाद या ज्यादा बच्चे बनाकर भारत की सम्पन्नता और अखंडता को चुनौती देने की कोशिश कर रहे हैं दूसरी ओर ईसाई समाज हिन्दुओं को ईसा मसीह की भेड़ बनाने के लिए रुपये, नौकरी, शिक्षा अथवा प्रार्थना से चंगाई के पाखंड का तरीका अपना रहे हैं।

सबसे पहले ईसाई समाज अपने किसी व्यक्ति को संत घोषित करके उसमे चमत्कार की शक्ति होने का दावा करते है। विदेशों में ईसाई चर्च बंद होकर बिकने लगे हैं और भोगवाद की लहर में ईसाई मत मृतप्राय हो गया है। संख्या और प्रभाव को बनाये रखने के लिए एशिया में वो भी विशेष रूप से भारत के हिन्दुओं से ईसाई धर्म की रक्षा का एक सुनहरा सपना वेटिकन के संचालकों द्वारा देखा गया है। इसी श्रृंखला में सोची समझी रणनीति के अंतर्गत पहले भारत से दो हस्तियों को नन से संत का दर्जा दिया गया था। मदर टेरेसा और बाद में सिस्टर अलफोंसो को संत बनाया गया था और अब जॉनपॉल को घोषित किया गया है।

यह संत बनाने की प्रक्रिया अत्यंत सुनियोजीत होती है। पहले किसी गरीब व्यक्ति का चयन किया जाता है। जिसके पास इलाज करवाने के लिए पैसे नहीं होते, जो बेसहारा होता है, फिर यह प्रचलित कर दिया जाता है कि बिना किसी ईलाज के केवल मात्र प्रार्थना से उसकी बीमारी ठीक हो गई और यह कृपा एक संत के चमत्कार से हुई। गरीब और बीमारी से पीड़ित जनता को यह संदेश दिया जाता है कि सभी को ईसा मसीह को धन्यवाद देना चाहिए।

अब जरा ईसाई समाज के दावों को परिक्षा की कसौटी पर भी परख लेते है। मदर टेरेसा जिन्हें दया की मूर्ति, कोलकाता के सभी गरीबों को भोजन देने वाली, अनाथ एवं बेसहारा बच्चो को आश्रय देने वाली, जिसने अपने जन्म देश को छोड़ कर भारत के गटरों से अतिनिर्धनों को सहारा दिया, जो की नोबेल शांति पुरस्कार की विजेता थी, एक नन से संत बना दी गयी की उनकी वास्तविकता से कम ही लोग परिचित है। जब मोरारजी देसाई की सरकार में धर्मांतरण के विरुद्ध बिल पेश हुआ, तो इन्हीं मदर टेरेसा ने प्रधान मंत्री को पत्र लिख कर कहां था की ईसाई समाज सभी समाज सेवा की गतिविधिया जैसे की शिक्षा, रोजगार, अनाथालय आदि को बंद कर देगा। अगर उन्हें अपने ईसाई मत का प्रचार करने से रोका जायेगा। तब प्रधान मंत्री देसाई ने कहा था इसका अर्थ क्या यह समझा जाये की ईसाईयों द्वारा की जा रही समाज सेवा एक दिखावा मात्र हैं और उनका असली प्रयोजन तो ईसाई धर्मांतरण है।

मदर टेरेसा दिल्ली में दलित ईसाईयों के लिए आरक्षण की हिमायत करने के लिए धरने पर बैठी थी। महाराष्ट्र में 1947 में एक चर्च के बंद होने पर उसकी संपत्ति को आर्यसमाज ने खरीद लिया। कुछ दशकों के पश्चात ईसाईयों ने उस संपत्ति को दोबारा से आर्यसमाज से खरीदने का दबाव बनाया। आर्यसमाज के अधिकारियों द्वारा मना करने पर मदर टेरेसा द्वारा आर्यसमाज को देख लेने की धमकी दी गई थी।

प्रार्थना से चंगाई में विश्वास रखने वाली मदर टेरेसा खुद विदेश जाकर तीन बार आंखों एवं दिल की शल्य चिकित्सा करवा चुकी थी। यह जानने की सभी को उत्सुकता होगी की हिन्दुओं को प्रार्थना से चंगाई का सन्देश देने वाली मदर टेरेसा को क्या उनको प्रभु ईसा मसीह अथवा अन्य ईसाई संतों की प्रार्थना द्वारा चंगा होने का विश्वास नहीं था जो वे शल्य चिकित्सा करवाने विदेश जाती थी?

अब सिस्टर अलफोंसो का उदहारण लेते हैं। करीब तीन दशकों के जीवन में वे करीब 20 वर्ष तक अनेक रोगों से स्वयं ग्रस्त रही थी। केरल एवं दक्षिण भारत में निर्धन हिन्दुओं को ईसाई बनाने की प्रक्रिया को गति देने के लिए संभवत उन्हें भी संत का दर्जा दे दिया गया और प्रचारित कर दिया गया की प्रार्थना से भी चंगाई हो जाती हैं।

➲ डा. विवेक आर्य

भारत के 72वें गणतंत्र दिवस पर कौन हैं ये...

भारत के 72वें गणतंत्र दिवस पर
कौन हैं ये?
जिन्होंने गणतंत्र दिवस पर
देश का झंडा झुका दिया।

कौन हैं ये?
जिन्होंने शांति पथ पर
लहू जवानों का बिखरा दिया।

कौन हैं ये?
गरीबों का वेश धर
आतंकी बन, जिन्होंने
किसानों का नाम
मिट्टी में मिला दिया।

आज जब पूरा देश
देश प्रेम के गीत गाता है
कुछ लोगों ने देश के विरुद्ध
लगाकर नारे
देशद्रोह क्यों दिखा दिया।

कौन हैं ये?
गुरु गोविंद के वंशज
तो नहीं हो सकते- जिन्होंने
देश भक्ति के दिन
देश को आतंक से दहला दिया।

कैसे कहें कि
गुरु नानक के बंदे हैं
स्वर्ण मंदिर में
सिर झुकाने वालों ने आज
देश का मस्तक झुका दिया।
दिल्ली के लाल किले को
फूलों की जगह लहू से सजा दिया।

जिस पंजाब पर गर्व था
हमको सदा
देश के लिए जानें देते जो सदा
क्या हुआ जो आज
देश के बारे में सोचे बिना
देश का झंडा गिरा दिया।

देश के दिल दिल्ली को
इन्होंने आग, तलवार,
पत्थर और लाठियों से सजा दिया।

कौन हैं ये?
क्या ये वे वीर हैं
जिन्होंने मुगलों से,
अंग्रेजों से ली थी टक्कर,
आज अपने ही देश की सरकार
प्रशासन, जनता को कुचल कर
अपना देशद्रोही रूप दिखा दिया।

कौन हैं ये?
कितनी बढ़ गई भूख इनकी
कितनी बड़ी ख्वाइशें हैं
कि ले तलवार हाथ में
अपनों का ही
मस्तक गिरा दिया।

चन्द स्वार्थों और
शर्तों की खातिर
गणतंत्र दिवस के दिन
अपने ही हाथों
अपने देश को,
अपनों ने ही जला दिया।

■■ डॉ. विजय जौली

Adi Shankracharya and Swami Dayananda

Article by- Dr. Vivek Arya

Adi Shankracharya and Swami Dayananda are two greatest pillars in the History of our country. The mission of both personalities was the revival of Vedic Dharma. Both were born in Brahmin family and they fought against birth based Caste system. Both shared same childhood name Shankar and Mool Shankar. Both left their home at tender age. Both attained Vairagya at early age and practiced highest order of celibacy in their life. Both fought against the dogmatic practices on name of Religion. Their books are famous as trinity. Adi Shankracharya's famous works are the commentary of Gita, Brahamsukta and Upanishads. Swami Dayananda's famous works are Satyarth Prakash, Rigvedadibashya-bhumika and Sanskar Vidhi.

Adi Shankracharya raised his voice against the anti Vedic sects like Buddhism and Jainism while Swami Dayananda faced different ritualistic sects/sub-sects among Hindus along with foreign sects like Islam and Christianity. No doubt that the work of both was difficult and herculean. Adi Shankracharya faced the indigenous sects shaped and fashioned in same workshop of our country. While Swami Dayananda had to contend against both indigenous and alien faiths.Adi Shankracharya needed to counter the arguments of Buddhists on which they rejected the authority of the Vedas.

Swami Dayananda apart form the propagation of the Vedas needed to disapprove the claims of many foreign religions along with the different sects and subsets flourishing in the country.The opponents of Adi Shankracharya never looked him with hatred. His all opponents were his own countryman. And it is inherent philosophy of Hinduism to respect even our enemy. Swami Dayananda faced stiff resistance from his countryman as well as the foreign countryman. Dayananda the marathon champion accepted this challenge and neutralized all his opponents. His only supporter was the one and only one almighty God.

In case of Adi Shankracharya an extensive knowledge of Hindu metaphysics was altogether necessary to do his work. While in case of Swami Dayananda had to work under entirely different circumstances. He had, unlike Shankracharya, to defend the Vedas not only against the attacks of those who did not admit their authority. But also fought against those who confined them to the unmeaning practices and grand absurd rituals.Adi Shankracharya era was scholarly era of our country. People used to accept the truth by participating in debates or Shastrarth.

This was a huge support to Adi Shankracharya. He managed to implement his vision working on the same methodology. He advised Ujjain King Sunadhava to organize his Shastrarth with the Jain Scholars. The rule was defined that the views of the winner would be acceptable to all. Adi Shankracharya won the debate and he thus earned the supporters as well as the royal patronage in form of the King. On the other hand in the age of Swami Dayananda the Vedic glory was almost forgotten. Dense ignorance prevailed for centuries. Swami ji needed to do gigantic effort to remind our countryman about the vast knowledge of Vedas. Our tradition of Shastrarth was forgotten.

मर्माचछादकविभुवर ओ३म्!

हे सर्व व्यापक ओ३म् प्रभु , हमारी महत्वपूर्ण रहस्यमय शक्तियों की रक्षा करो!

किसी के काम जो आए,
उसे इंसान कहते हैं!
पराया दर्द अपनाए,
उसे इंसान कहते हैं!
उसे इंसान कहते हैं....

कभी धनवान है कितना,
कभी इंसान निर्धन है!
कभी सुख है कभी दु:ख है,
इसी का नाम जीवन है!
जो मुशकिल में न घबराए,
उसे इंसान कहते हैं!

किसी के काम जो आये....
ये दुनिया एक उलझन है,
कहीं धोखा कहीं ठोकर!
कोई हंस-हंस के जीता है,
कोई जीता है रो-रो कर!
जो गिरकर फिर संभल जाए,
उसे इंसान कहते हैं!

किसी के काम जो आये..
उसे इंसान कहते हैं...

अगर गलती रुलाती है,
तो ये राह भी दिखाती है!
बशर गलती का पुतला है,

ये अक्सर हो ही जाती है!
जो गलती करके पछताए,
उसे इंसान कहते हैं!
किसी के काम जो आये...
उसे इंसान कहते हैं...

अकेले ही जो खा खाकर
सदा गुजरान करते हैं!
यूं भरने को तो दुनिया में,
पशु भी पेट भरते हैं!
'पथिक' जो बांटकर खाए,
उसे इंसान कहते हैं!

किसी के काम जो आये...
उसे इंसान कहते हैं...
पराया दर्द अपनाए उसे,
इंसान कहते हैं!
उसे इंसान कहते हैं!...
किसी के काम जो आये..

पथिक

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहां जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है।।
टुक नींद से अखियां खोल जरा, और अपने प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है।।
जो कल करना सो आज कर ले, जो आज करना सो अब कर ले।
जब चिड़ियां ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है॥
नादान भुगत करनी अपनी, ओ! पापी पाप में चैन कहां।
जब पाप की गठरी सीस धरी, फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है॥

जीवन की घड़ियां वृथा न खो

जीवन की घड़ियां वृथा न खोय।
ओ३म् जपो, ओ३म् जपो॥

ओ३म् ही सुख का सार है
जीवन है, जीवन आधार है
प्रीति न इसकी मन से तजो
ओ३म् जपो, ओ३म् जपो॥

साथी बना ले, ओ३म् को
मन में बसा ले, ओ३म् को
इसके सिवा मारग न कोय
ओ३म् जपो, ओ३म् जपो॥
चोला मिला है कर्म का

करने को सौदा, धर्म का
धोना जो चाहे जीवन को धोय
ओ३म् जपो, ओ३म् जपो॥

हृदय की गति, सम्भालिए
अंदर की ओर, निहारिए
चादर न लम्बी तान के सोय
ओ३म् जपो, ओ३म् जपो॥

मुख से ही, ओ३म् उचारिए
मन में अर्थ, विचारिए
श्वासों की माला इसमें पिरोय
ओ३म् जपो, ओ३म् जपो॥

वेला अमृत गया आलसी सो रहा

वेला अमृत गया, आलसी सो रहा, बन अभागा।
साथी सारे जगे तू न जागा॥
झोलियां भररहे भाग्यवाले, लाखो पतियों ने जीवन सम्भाले।
रंक राजा बने, भक्ति रस में सने, कष्ट भागा।
कर्म उत्तम थे नर-तन जो पाया, आलसी बन के हीरा गंवाया।
उलटी हो गई मति, करके अपनी क्षति, रोने लगा॥
धर्म वेदों का तूने न पाला, वेला अमृत गया न सम्भाला।
सौदा घाटे का कर, हाथ माथे पे धर, रोने लगा॥
'देश' अब भी न तूने विचारा, सिर से ऋषियों का ऋण न उतारा।
हंस का रूप था, गदला पानी पिया, बनके कागा॥
साथी सारे जगे तू न जागा॥

कल्पना चावला

पुण्यतिथि
1 फरवरी : 2003

भारत की बेटी-कल्पना चावला करनाल, हरियाणा, भारत में एक हिंदू भारतीय परिवार में पैदा हुई थीं। उनका जन्म 17 मार्च सन् 1962 में एक भारतीय परिवार मे हुआ था। उसके पिता का नाम श्री बनारसी लाल चावला और माता का नाम संजयोती था। वह अपने परिवार के चार भाई-बहनों में सबसे छोटी थीं। घर में सब उसे प्यार से मोंटू कहते थे। कल्पना की प्रारंभिक पढाई लिखाई 'टैगोर बाल निकेतन' में हुई। कल्पना जब आठवीं कक्षा में पहुचीं तो उन्होंने इंजीनियर बनने की इच्छा प्रकट की। उसकी मां ने अपनी बेटी की भावनाओं को समझा और आगे बढ़ने मे मदद की। पिता उसे चिकित्सक या शिक्षिका बनाना चाहते थे। किंतु कल्पना बचपन से ही अंतरिक्ष में घूमने की कल्पना करती थी। कल्पना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण था-उसकी लगन और जुझारू प्रवृति। कल्पना न तो काम करने में आलसी थी और न असफलता में घबराने वाली थी। उनकी उड़ान में दिलचस्पी जहांगीर रतनजी दादाभाई टाटा से प्रेरित थी जो एक अग्रणी भारतीय विमान चालक और उद्योगपति थे।

कल्पना चावला ने प्रारंभिक शिक्षा टैगोर पब्लिक स्कूल करनाल से प्राप्त की। आगे की शिक्षा वैमानिक अभियान्त्रिकी में पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज, चंडीगढ़ से करते हुए 1982 में अभियांत्रिकी स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वे संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए 1982 में चली गईं और 1984 वैमानिक अभियान्त्रिकी में विज्ञान निष्णात की उपाधि टेक्सास विश्वविद्यालय आर्लिंगटन से प्राप्त की। कल्पना ने 1986 में दूसरी विज्ञान निष्णात की उपाधि पाई और 1988 में कोलोराडो विश्वविद्यालय बोल्डर से वैमानिक अभियंत्रिकी में विद्या वाचस्पति की उपाधि पाई। कल्पना जी को हवाईजहाजों, ग्लाइडरों व व्यावसायिक विमानचालन के लाइसेंसों के लिए प्रमाणित उड़ान प्रशिक्षक का दर्जा हासिल था। उन्हें एकल व बहु इंजन वायुयानों के लिए व्यावसायिक विमानचालक के लाइसेंस भी प्राप्त थे। अन्तरिक्ष यात्री बनने से पहले वो एक सुप्रसिद्ध नासा कि वैज्ञानिक थी।

अंतरिक्ष पर पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला कल्पना चावला की दूसरी अंतरिक्ष यात्रा ही उनकी अंतिम यात्रा साबित हुई। सभी तरह के अनुसंधान तथा विचार-विमर्श के उपरांत वापसी के समय पृथ्वी के वायुमंडल में अंतरिक्ष यान के प्रवेश के समय जिस तरह की भयंकर घटना घटी वह अब इतिहास की बात हो गई। नासा तथा विश्व के लिये यह एक दर्दनाक घटना थी। 1 फरवरी 2003 को कोलंबिया अंतरिक्षयान पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश करते ही टूटकर बिखर गया। देखते ही देखते अंतरिक्ष यान और उसमें सवार सातों यात्रियों के अवशेष टेक्सास नामक शहर पर बरसने लगे और सफल कहलाया जाने वाला अभियान भीषण सत्य बन गया।

विक्रम सिंह डाला

छत्रपति शिवाजी महाराज

भारत के वीर सपूतों में से एक श्रीमंत छत्रपति शिवाजी महाराज के बारे में सभी लोग जानते हैं। बहुत से लोग इन्हें हिन्दू हृदय सम्राट कहते हैं तो कुछ लोग इन्हें मराठा गौरव कहते हैं, जबकि वे भारतीय गणराज्य के महानायक थे। छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म 19 फरवरी 1630 में मराठा परिवार में हुआ। कुछ लोग 1627 में उनका जन्म बताते हैं। उनका पूरा नाम शिवाजी भोंसले था। शिवाजी, पिता शाहजी और माता जीजाबाई के पुत्र थे। उनका जन्म स्थान पुणे के पास स्थित शिवनेरी का दुर्ग है। राष्ट्र को विदेशी और आतताई राज्य-सत्ता से स्वाधीन करा सारे भारत में एक सार्वभौम स्वतंत्र शासन स्थापित करने का एक प्रयत्न स्वतंत्रता के अनन्य पुजारी वीर प्रवर शिवाजी महाराज ने भी किया था। इसी प्रकार उन्हें एक अग्रगण्य वीर एवं अमर स्वतंत्रता-सेनानी स्वीकार किया जाता है। महाराणा प्रताप की तरह वीर शिवाजी राष्ट्रीयता के जीवंत प्रतीक एवं परिचायक थे। आओ जानते हैं श्रीमंत छत्रपति वीर शिवाजी के बारे में। शिवाजी पर मुस्लिम विरोधी होने का दोषारोपण किया जाता रहा है, पर यह सत्य इसलिए नहीं कि उनकी सेना में तो अनेक मुस्लिम नायक एवं सेनानी थे ही, अनेक मुस्लिम सरदार और सूबेदारों जैसे लोग भी थे। वास्तव में शिवाजी का सारा संघर्ष उस कट्टरता और उद्दंडता के विरुद्ध था, जिसे औरंगजेब जैसे शासकों और उसकी छत्रछाया में पलने वाले लोगों ने अपना रखा था। 1674 की ग्रीष्म ऋतु में शिवाजी ने धूमधाम से सिंहासन पर बैठकर स्वतंत्र प्रभुसत्ता की नींव रखी। दबी-कुचली हिन्दू जनता को उन्होंने भयमुक्त किया।

भक्त की भावना

धर्म, आचार और भक्ति इन शब्दों का दुरुपयोग संसार में जितना हो रहा है, उतना शायद ही किसी शब्द का हुआ होगा। धर्म आचार और भक्ति के ही नाम पर इतने बड़े-बड़े अत्याचार संसार में हुए हैं कि उनकी गणना नहीं हो सकती। संसार की प्राय: सभी जातियां तथा देशों के इतिहास इनसे भरे पड़े हैं। निष्पक्ष उदारभाव से विचारने पर बुद्धिमान मनुष्य को यही निश्चय हो रहा है कि धर्म आचार और भक्ति के वास्तविक स्वरूप को न समझ कर ही ये सब अनर्थ भूमंडल में हुए व हो रहे हैं।

धर्म (धरति लोकं, धार्यते येन जगत्) नाम उन नियमों (Principal Laws of nature) का है, जिसके आधार=आश्रय पर यह संसार चल रहा है। 'आचार' उस व्यवहार का नाम है, जिसको करने से मनुष्यों का परस्पर कभी कुछ भी झगड़ा नहीं हो सकता। दूसरों के साथ वही वर्ताव करो जैसा कि तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' "Do with others as you wish to be done by others" यह है धर्म और आचार का विशुद्ध स्वरूप। क्या कोई कह सकता है कि इस धर्म और आचार की विश्व में कभी किसी भी अवस्था में आवश्यकता नहीं? यह धर्म और आचार तो मानव समाज से तीन काल में भी लुप्त नहीं हो सकता। एक जैसा आवश्यक, नहीं-नहीं अंतर्हृदय की सच्ची भावना से अपनाने योग्य है, और रहेगा।

'भक्ति' भी अन्तरात्मा की हृदय के अंत:पटल में वर्तमान रहने वाली उन गहरी भावनाओं तथा उद्‌गारों का नाम है, जो बिना किसी विडम्बना के सम्पूर्ण विश्व के नियंता प्रभु की सत्ता का स्वयं अनुभव करते हुए उत्पन्न होती है। और जिन भावनाओं का बाह्य जगत् व लोकाचार से कुछ भी संबंध नहीं होता। पिता-पुत्र अथवा शिशु और माता की वह किलोले हैं, जो बिना किसी शब्द का उच्चारण किये स्नेह से परिपूर्ण अवस्था में होती हैं।

इसके विपरीत लोक-समाज के विचार से लोकषणा की दृष्टि से किसी विशेष समुदाय को अपने पीछे चलाने के लिए ध्यान के नाम पर की हुई हमारी अनेक क्रियायें 'भक्ति' की परिभाषा में नहीं आ सकतीं। इन मिथ्या भक्तियों से पृथक करने के विचार से ही परम तपस्वी, परम ईश्वर-भक्त महायोगी जितेन्द्रिय, निष्पक्षपात महात्मा ऋषि दयानन्द सरस्वती ने भक्तिमार्ग के इस ग्रन्थ 'आर्याभिविनय' की वेदमंत्रों के आधार पर रचना की, अपनी कल्पनामात्र के आधार पर नहीं।

संसार में प्राय: यही देखा जाता है कि यम नियमों का पालन किये बिना ही हम लोग 'भक्त' बनाना चाहते हैं। ऐसे मार्ग पर चलने वाले 'कनफकवे' गुरुओं की ही आजकल दाल गलती है। यम नियमोंवाले (जैसे इस ग्रन्थ की) सीधे-सादे शब्दों की भक्ति को तो सूखी भक्ति के नाम से पुकारा जाता है। यह भ्रम कहीं-कहीं आर्य कहलाने वालों में भी देखा जाता है। वे कोई भड़कीली चमाचम भक्ति चाहते हैं। सो ये तो प्रकृति के गुण हैं। दोनों आत्मा और परमात्मा तो इससे पृथक् हैं। हां, जीव अज्ञानवश उसमें फंस जाता है, तभी उसको यत्न भी करना पड़ता है।

पवित्र वेदवाणी में सूक्तों के सूक्त ऐसी भक्ति से परिपूर्ण हैं। जिनमें वही स्वाभाविक (Natural) भावों का ही संचार है। बनावटी बातों का उनमें लेश भी नहीं। यह इस ग्रंथ के एक-एक मंत्र का ध्यानपूर्वक पाठ करने से ज्ञान हो सकता है। अंतर्हृदय की उपर्युक्त भावनाओं के कुछ अंश इस ग्रन्थ में से सहृदय पाठकों के सम्मुख उपस्थित किये जाते हैं। आपका तो स्वभाव ही है कि अङ्गीकृत को कभी नहीं छोड़ते। सो आप सदैव हम को सुख देंगे, यह हम लोगों को दृढ़ निश्चय है। 'हम सब लोग आपकी प्राप्ति की अत्यंत इच्छा करते हैं। सो आप अब शीघ्र हमको प्राप्त होओ। जो प्राप्त होने में आप थोड़ा भी विलम्ब करेंगे, तो हमारा कुछ भी कभी ठिकाना न लगेगा।' हे मनुष्यों! उसको मत भूलो। विना उसके कोई सुख का ठिकाना नहीं है। किंच हम लोग तो आपके प्रसन्न करने में कुछ भी समर्थ नहीं हैं। सर्वथा आपके अनुकूल वर्तमान नहीं कर सकते । परंतु आप तो अधमोद्धारक हैं, इससे हमको स्वकृपाकटाक्ष से सुखी करें। जैसे पुत्र लोग अपने पिता के घर आनंदपूर्वक निवास करते हैं, वैसे ही जो परमात्मा के भक्त हैं, वे सदा सुखी ही रहते हैं।

यह है हृदयङ्गम-सच्ची भावना से परिपूर्ण श्रद्धायुक्त भक्त की भावना, जो एक साक्षात्कृतधर्मा परम ईश्वरभक्त के उद्‌गार हैं। जिनके एक-एक शब्द पर घंटों विचार करने पर भी अधिक से अधिक आनंद प्रतीत होता है। जिस दिन जिस घड़ी इस मार्ग पर चलने का दृढ निश्चय कर चुकेंगे और हमें मार्ग की अनुकूल सामग्री की डटकर खोज होगी, तभी इन भोले-भोले सरल शब्दों का महत्तव हमें समझ में आवेगा।

समाचार - सूचनाएं

- 11 जनवरी को भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री जी की पुण्य तिथि के अवसर पर भावपूर्ण स्मरण किया गया।
- 14 जनवरी मकर संक्रांति के अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया।
- 19 जनवरी को महाराणा प्रताप के स्मृति दिवस के अवसर पर भावपूर्ण स्मरण किया गया।
- 23 जनवरी को नेताजी सुभाषचंद्र बोस के 125वें जन्म दिवस पर सत्संग में भावपूर्ण स्मरण कर भारत की स्वाधीनता के लिए किये गये बलिदान को याद किया गया।
- 25 दिसम्बर को पंडित मदनमोहन मालवीय जी की जयंती पर याद किया गया।
- 26 जनवरी भारत के 72वें गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण के पश्चात ब्र. द्वारा देशभक्ती के गीतों व भाषण की प्रस्तुति की गई।
- 28 जनवरी शेरे पंजाब लाला लाजपत राय के जन्म दिवस पर भावपूर्ण स्मरण किया गया।
- 30 जनवरी महात्मा गांधी जी के स्मृति दिवस पर याद किया गया।
- केंद्रीय आर्य युवक परिषद का जूम पर वार्षिक विशेष कार्यक्रम 29-30-31 जनवरी को सफल आयोजित किया गया।
- आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा आचार्य बलदेव जी के स्मृति दिवस पर दयानन्द मठ में दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 30-31 जनवरी को किया गया।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

प्रख्यात आर्य नेता, टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी एवं पूज्य महात्मा आनंद स्वामी जी के पौत्र श्री पूनम सूरी जी को डीएवी कॉलेज प्रबंधकर्ता समिति के प्रधान के रूप में पुनर्निर्वाचित होने पर आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

विनम्र श्रद्धांजलि

श्री जगदीश्वर नाथ कठपालिया अग्रज विजेन्द्र कठपालिया मंत्री का आकस्मिक निधन 1 जनवरी 2021 को हो गया। इनका जन्म पाकिस्तान के बहावलपुर शहर में 1934 में एक कट्टर आर्य समाजी परिवार में हुआ था। इनके नाना एक प्रसिद्ध उपदेशक थे। इनकी दादीजी ने पकिस्तान में पहली कन्या पाठशाला आरंभ कर उसका संचालन किया। इनके पिताजी आर्य समाज दीवान हाल से संबद्ध रहे व लगभग 30 साल तक मंत्री, प्रधान पद को सुशोभित किया। यह स्वयं भी आर्य समाज दीवान हाल व 30 वर्षों तक आर्य समाज कृष्णा नगर के साथ जुड़े रहे और प्रधान व मंत्री पदों को सुशोभित करते रहे। उनकी यज्ञ के प्रति आगाध श्रद्धा थी। वह यदा-कदा यज्ञ के मंत्रों कि व्याख्या भी करते थे। उनका जीवन आर्य समाज को समर्पित था।

डॉ. अशोक आर्य जी का 8-1-2021 को आकस्मिक निधन हो गया। उनकी अंत्येष्टि पूरे विधि-विधान के साथ हिडन शमशान घाट गाजियाबाद में हुआ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्‌गदि प्रदान करें व उनके परिवार को दारूण दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

निर्भीक संन्यासी, स्वामी भीष्म जी महाराज, जिन्होंने ब्रह्मचर्य शक्ति द्वारा सौ वर्ष और अधिक आयु प्राप्त कर, आर्य समाज का बहुत कार्य किया और अनेकों लोगों को आर्य समाज की विचारधारा से जोड़कर, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के सपनों को साकार करने में बहुत बड़ा योगदान दिया। 8 जनवरी को उनकी पुण्यतिथि पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं शत्-शत् नमन। आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

माता सरला कालरा जी का 11 जनवरी को आकस्मिक निधन हो गया। माती जी आर्य समाज नोएडा के वानप्रस्थाश्रम में निवास करती थीं। माता जी ने आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल और वानप्रस्थाश्रम के लिए अपना पूर्ण सहयोग दिया। माता जी सरल एवं धार्मिक, यज्ञ प्रेमी, महर्षि दयानन्द की अनन्य भक्त और समाज के लिए अमूल्य धरोहर थीं। आर्य समाज इस दुःखद घटना पर अपनी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि समस्त परिवार को असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

वरिष्ठ वैदिक विद्वान आचार्य सत्यानन्द जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा देवी जी का पिछले दिनों जयपुर में निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार पूरे वैदिक रीति से आदर्शनगर, जयपुर में किया गया। आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!! **- प्रबंध सम्पादक, विश्ववारा संस्कृति**

पाठक के पत्र

- **श्रीमान प्रबंध संपादक महोदय!** बहुत ही सुंदर पत्रिका, विविध विषयों से भरपूर है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!! **- सार्वदेशिक सभा, दिल्ली**
- बहुत सुंदर प्रयास है, ईश्वर आपको उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करते हुए इस सुंदर कार्य को और उन्नति की ओर प्रेरित करें और अपने उद्देश्य में निरन्तर अग्रसर रहें। **- आभा मनकतला, ज्वालापुर, हरिद्वार!**
- **आदरणीय प्रबंध संपादक महोदय!** आपकी पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' में बहुत सुन्दर ज्ञान वर्धक लेख हैं। एक लेख जिसमें 'क्या हमें अपने पूर्वजन्म एवं पुनर्जन्म होने के सिद्धान्त का ज्ञान है' इसमें इस बात को अवश्य स्पष्ट करना चाहिए कि आत्मा पूर्व जन्म या अगले जन्म के बारे में जानता है या जान सकता है? इसको स्पष्ट करने से अनेकों की भ्रान्ति हट जाती है। मुख्य बात पुनर्जन्म की बताई गई है जिसे आर्य लोग अच्छी तरह से जानते हैं। आपका बहुत सुंदर प्रयास है, ईश्वर आपको उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करते हुए इस सुंदर कार्य को और उन्नति की ओर प्रेरित करें और अपने उद्देश्य में निरन्तर अग्रसर रहें। बहुत ही सुंदर पत्रिका, विविध विषयों से भरपूर है। **बहुत-बहुत धन्यवाद। - डा. श्वेटकेतु शर्मा, बरेली**

यज्ञ में समिदाधान में तीन समिधाओं की ही आहुतियां क्यों दी जाती है...

ती न समिधाओं के आधार में कई भौतिक एवं आध्यात्मिक भावों की ओर आकृष्ट किया गया है। संसार का जितना विस्तार है उस पर दृष्टि डाले तो यह सारा विश्व मुख्यत: तीन का ही विस्तार है, और यह तीन ही भागों में विभक्त है। तीन चीजों के होने पर ही यह जगत कार्यरूप में चल रहा है। इसी को विस्तार में हम निम्न प्रकार उदाहरण से समझ सकते हैं। देखिये यहां इस लोकिक जीवन में केवल तीन का ही पसारा है, यह जगत का कार्य सिर्फ तीन पर ही आधारित है, इसेही विद्वानों द्वारा 'चैतवाद' कहा गया है-

1. तीन अनादि सत्ताये- ईश्वर, जीव और प्रकृति। 2. ईश्वर के तीन गुण- सत, चित्त और आनंद। 3. प्रकृति के तीन गुण-सत्व, रज और तम्। 4. तीन लोक- पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्योलोक। 5. तीन काल-भूत, वर्तमान और भविष्यत् काल। 6. तीन अवस्था- उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय। 7. तीन प्रकार के सुख-दु:ख- आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक। 8. ओ३म् के तीन अक्षर- अ, उ और म्। 9. गायत्री- तीन पद। 10. तीन समय- प्रात:, मध्य और सायं। 11. तीन अग्नि- गार्हपत्य, आवहनीय और दक्षिणाग्नि। 12. मोक्ष प्राप्ति के तीन साधन- धर्म, अर्थ और काम। 13. तीन अवस्थाएं- वाल्य, योवन और वृद्धावस्था। 14. तीन वचन- एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। 15. तीन पुरुष- उत्तम, मध्यम और निकृष्ट। 16. तीन गुरु-माता, पिता और आचार्य। 17. तीन वाण-पितृ काण, देव त्राण और ऋषि ऋण। 18. यज्ञोपवीत- तीन सूत्र। 19. गायत्री के पहले तीन महाव्याहतियां- भू, भुव और स्व। 20. यज्ञ के तीन अर्थ- देवपूजा, संगतिकरण और दान। 21. जीव के तीन गुण- ज्ञान, कर्म और उपासना। 22. कर्मकांड के तीन प्रश्न- क्या, कैसे और क्यों। 23. कर्म भी तीन- सचित, प्रारब्ध और क्रियमान। 24. तीन देह- स्थूल, सूक्ष्म और कारण। 25. आचमन- प्रथम, द्वितीय और तृतीय। 26. यज्ञ की पूर्णता की सूचना- तीन घृत की पूर्णाहुतियां। 27. संसार का कार्य व्यवहार- ग्राहक, विक्रेता और सामान। इन उपरोक्त तीनों चीजों के द्वारा ही यह सांसारिक यज्ञ पूर्ण हो रहा है और यज्ञ को भी त्रिवृत अर्थात् तिहरा या तीन से घिरा हुआ बताया गया है। अत: स्पष्ट हुआ कि- 'यह जगत त्रिपदात्मक है और इस जगत का सारा व्यवहार तीन चीजों पर ही टिका हुआ है।'

जब समिधा अग्नि में चढ़ाई जाती है तो समिधा में दीप्त अग्नि उद्बुद्ध हो जाती है और समिधा प्रदीप्त अवस्था में आ जाती है, अर्थात् समिघा जल उठती है, अग्नि रूप हो जाती है, समिधा अग्नि की प्रतिनिधि है। जैसे भौतिक अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिए काष्ठ की समिधा प्रयोग में लाते हैं, ठीक उसी तरह आध्यात्मिक अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिए प्रथम शरीर, द्वितीय मन और तृतीय आत्मा रूपी तीन समिधाएं प्रयोग में लाते हैं।

1. इन तीन समिधाओं में पहली- एक समिधा आत्मा के रूप का, दूसरी- मन में श्रद्धा और पवित्रता के रूप का, तीसरी-शरीर की निरोग्यता के रूप का प्रतिनिधित्व करती है।

2. ये तीन समिधाएं- भूलोक, अंतरिक्षलोक और गोलोक की समृद्धि के लिए अग्नि को समर्पित की जाती हैं। (1) भूलोक की- अग्नि के लिए। (2) अंतरिक्ष लोक की-वरूण के लिए। (3) विद्युत- अग्नि के लिए।

योलोक के अग्नि रूप- सूर्य के लिए ये तीन समिघाएं अर्पित की जाती है। यही सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति तथा शारीरिक निरोग्यता, मानसिक शांति और आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति के लिए तीन समिधाओं की आहुति देने का रहस्य है।

3. समिदाधान और उसके मंत्र- समिदाधान के मंत्रों को यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो पता चल रहा है कि इन मंत्रों में इदम्, समिध एव सुसंगिध पर जोर दिया गया है। साथ ही साथ (1) अग्नि (2) जातवेद एवं (3) अड़्गिारस इन तीन अग्नियों के लिए आहुति देने का विधान भी स्पष्ट हो रहा है।

मनुष्य अपने जीवन को पज्ञमप या यज्ञरूप बनाना चाहता है तो जीवन के तीन जाश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ को तीन समिधारुप बनाए और उनके कर्तव्य-कर्मों को सफलतापूर्वक पालन करता हुआ धर्माचरण करे तो ये जीवन में तीन समिधाएं देना सार्थक होगा। इन समस्त आध्यात्मिक भावों की ओर संकेत करती हुई ये घृत-संलिप्त तीन समिधाएं जहां भैतिक यज्ञाग्नि को चैतन्य करती है वहां आन्तरिक आत्मज्योति के भी चेतन, उद्‌द्ध करें, आत्माग्नि को भी प्रज्वलित करती रहें।

तीन समिधाओं के द्वारा यज्ञकर्ता अपना भौतिक व आध्यात्मिक उत्थान चाहता है। कहीं ऐसा न हो कि भौतिक अग्नि तो वह प्रज्वलित करता रहे और आत्मिक अग्नि बुझी रहे। आत्मिक उत्थान भी दिनोंदिन होता रहे, यज्ञकर्ता का जीवन याज्ञिक बनता रहे।

■■ गंगाशरण आर्य (साहित्य सुमन)

फूलगोभी

लाजवाब स्वाद, चमत्कारी गुण

फूलगोभी सर्दियों की मुख्य सब्जी है। गर्म तासीर और वादी प्रकृति की यह सब्जी अपने लाजवाब स्वाद से बच्चों से लेकर बूढ़ों तक के मुंह में पानी ला देती है। स्वादिष्ट लिज्जतदार पकौड़े, पराठे और ललचाने वाले स्वाद की सब्जियां गोभी को सब्जियों का बादशाह बनाती हैं। इस सब्जी के अनूठे और रोग निवारक गुण हैं।

जोड़ों की आवाज और दर्द दूर करे

कम उम्र में ही हड्डियों से चट-चट की आवाज, मांसपेशियों में दर्द व सूजन जीवन की एक-एक सांस को दुखदायी बना देती है। प्रतिदिन प्रातः एवं सायं 5-6 बजे के आसपास कच्ची फूलगोभी साफ करके काट लें। अब गोभी को चबा-चबाकर खाएं। ऊपर से एक गिलास गाजर, आंवले का रस घूट-घूट करके पी लें। इसके बाद भुनी पिसी अलसी का पाउडर 10 ग्राम फांक लें या गरम पानी से ले लें। यह प्रयोग तीन-चार महीने तक नियमपूर्वक करें। कमर, गर्दन, कंधों, घुटनों का दर्द धीरे-धीरे जड़ से ठीक हो जाएगा।

मसूड़ों की सड़न और खाना फंसना करे सही

मुंह से श्वांस छोड़ने के साथ बुरी बदबू, पायरिया, मसूड़ों की सड़न और कमजोर दांत जैसी समस्याएं कच्चा फूलगोभी नियम से खाने से ठीक हो जाती हैं। गेरू, सेंधा नमक, हल्दी, लौंग को बराबर-बराबर लेकर पीस लें। पांच ग्राम इस चूर्ण में 5 ग्राम कड़ुवा या सरसों का तेल मिलाकर मसूड़ों पर 10-12 मिनट तक उंगली की मदद से यह पेस्ट लगाकर मसूड़ों की हल्की-हल्की मालिश करें। दस मिनट यह पेस्ट लगाकर रखें। अब फूलगोभी के 2-3 पत्तों को पीसकर या उबालकर उसके गुनगुने पानी से कुल्ला करें। दांतों की कोई भी समस्या हो, यह रामबाण नुस्खा है। जिनके दांतों में खाना फंसता है, एक सप्ताह में ही दांतों में खाना फंसने की तकलीफ पूरी तरह ठीक हो जाती है।

तेज धड़कन व घबराहट से दे राहत

फूलगोभी में प्राकृतिक रूप से आइसोथियोसाइनेटस मॉलिक्यूल होता है, जो हृदय को शक्तिशाली बनाता है। फूलगोभी के विटामिन एवं पोषक तत्व नर्वस सिस्टम को ताकत देकर हृदय की अनियमित धड़कन और घबराहट को दूर करने में लाभकारी हैं। इसमें कोलेस्ट्राल शून्य मात्रा में होता है और धमनियों की अकड़न को दूर करके धमनियों को नर्म व मुलायम बनाकर हृदयाघात व बढ़ते कोलेस्ट्राल पर काबू पाने में मददगार है। फूलगोभी, शिमला मिर्च और शलजम का सलाद प्रतिदिन लेने से ऐसी परेशानियां ठीक हो जाती हैं।

मोटापा घटाए, चेहरे की रौनक बढ़ाए

बिना कमजोरी, बिना थकावट और चेहरे की रौनक, खूबसूरती में तनिक भी फर्क डाले बिना मोम की तरह चर्बी गलाकर मोटापा घटाने के लिए फूलगोभी मात्र सब्जी न होकर दिव्य औषधि है। गोभी में 100 ग्राम में कुल 25 से 30 कैलोरी होती है लेकिन कैल्शियम, फास्फोरस विटामिन 'ए', 'बी', 'सी' एवं विटामिन 'के' पोटेशियम जैसे उपयोगी तत्व भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। फूलगोभी में इन्डोल्स एवं सल्फोराफेन जैसे तत्व वजन घटाने का काम करते हैं।

इम्यूनिटी और हीमोग्लोबिन बढ़ाए

खून की कमी, रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति कम होना, खुलकर भूख न लगना, लीवर की समस्या से वर्षो से पीड़ित होना आदि समस्याओं के स्थायी इलाज के लिए कच्चा फूलगोभी 100 ग्राम, टमाटर 100 ग्राम, चुकन्दर 50 ग्राम, 4-5 लहसुन की कलियां लेकर सलाद बनाएं। इसमें नीबू, काला नमक डालकर प्रातः एवं रात में भोजन के साथ सेवन करें और खाना खाने के बाद पानी न पीकर पंद्रह-बीस मिनट से आधा घंटा बाद गाजर व एक आंवले का ताजा रस गुनगुना करके एक गिलास पी लें।

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल नोएडा में 72वें गणतंत्र दिवस की झलकियां

ब्रह्मचारियों को पारितोषिक वितरण करते आर्य समाज नोएडा के अधिकारी।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022 Date of Dispatch 12 Every Month

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल नोएडा में 72वें गणतंत्र दिवस की झलकियां

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल के अधिकारी, आचार्य व वानप्रस्थाश्रम के सदस्यगण।

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ अधिकारी, आचार्यगण एवं सदस्य।

ओ३म् **विश्ववारा संस्कृति** ओ३म्

आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221